Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلَا تَأْكُلُوٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ

(सूरः बकरः , आयत : 189)

अनुवाद : और अपने ही मालों को आपस में झूठ और धोखे से मत खाया करो। और न ही उन्हें हाकिमों (जजों) के सामने इस इरादे से पेश करो कि तुम गुनाह करके लोगों (यानि कौमी) के माल में से कुछ हिस्सा हड़प सको, जबकि तुम अच्छी तरह जानते हो।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 10
अंक - 19
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

09 जुलकाद , 1446 हिज्री कमरी, 08 हिजरत 1404 हिज्री शम्सी, 08 मई 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

धर्म आसान है

عَنْ اَبِيْ هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: اِنَّ الدِّيْنَ يُسْرٌ وَلَنْ يُّشَادَّ الدِّيْنَ اَحَدٌ اِلَّا غَلَبَهٗ فَسَدِّدُوْا وَقَارِبُوْا وَاَبْشِرُوْا وَاسْتَعِيْنُوْا بِالْغَدْوَةِ وَالرَّوْحَةِ وَشَيْءٍ مِنَ الدُّلْجَةِ

(بخاری کتاب الایمان باب الدین یُسرٌ)

(بحوالہ حدیقۃ الصالحین حدیث نمبر 776)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ियल्लाहु अन्हु) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

“धर्म आसान है, लेकिन जो कोई उस पर पूरी तरह हावी होना और उसे अपने काबू में लाना चाहता है, वह अपनी इस कोशिश में कामयाब नहीं हो सकेगा। इसलिए संतुलन अपनाओ, सहूलियत के करीब रहो, लोगों को शुभ समाचार दो और सुबह-शाम तथा रात के कुछ हिस्से में (नवाफ़िल के ज़रिये) अल्लाह तआला से मदद माँगो।”

जो गिड़गिड़ाहट और रोना था, उसमें कैसी तलवार छुपी हुई थी कि जिसने उमर जैसे व्यक्ति को जो बाकायदा क़त्ल का समझौता करके आता है अपनी अदा का शहीद बना लिया। उस गिड़गिड़ाहट और रोना में ऐसी तलवार होती है जो तलवार और भाले से भी ज़्यादा असर करती है

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

देखो, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को कितना फ़ायदा पहुँचा। एक समय था जब वे ईमान नहीं लाए थे और चार साल तक इस्लाम से रुके रहे। अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है कि इसमें क्या रहस्य था। अबू जहल ने कोशिश की कि कोई ऐसा आदमी मिले जो रसूलुल्लाह को क़त्ल कर दे। उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बहुत बहादुर और दिलेर माने जाते थे और उनका बड़ा रौब-दाब था। उन्होंने आपस में मशवरा करके रसूलुल्लाह के क़त्ल का बीड़ा उठाया और उमर और अबू जहल दोनों ने एक समझौते पर दस्तख़त किए कि अगर उमर क़त्ल करके लौटें तो उन्हें एक तय की गई रकम दी जाएगी।

यह अल्लाह तआला की क़ुदरत ही है कि वही उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जो एक समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क़त्ल करने के इरादे से निकले थे, वही बाद में इस्लाम में आकर ख़ुद शहीद हो गए। वह क्या ही अजीब वक़्त था। ग़रज़, उस समय यह समझौता हुआ कि "मैं क़त्ल करूंगा", और इस लिखित इरादे के बाद वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तलाश और जासूसी में लग गए। रातों

शेष पृष्ठ 12 पर

जो व्यक्ति अपनी क़ौम के लोगों को लाभ पहुँचाता है, वह भी मुस्लिम है।
जो व्यक्ति अपने पड़ोसियों और रिश्तेदारों को अमन देता है और उनके लिए कोई फ़साद या खून-खराबा पैदा नहीं करता, वह भी मुस्लिम है।
लेकिन जो व्यक्ति इसके उलट आचरण करता है, वह ग़ैर-मुस्लिम है, चाहे वह रात-दिन अपने आपको मुस्लिम कहता रहे।

सैयदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरा हज, आयत नंबर 79 की तफसीर में फ़रमाते हैं:

हर इंसान का पहला संबंध अल्लाह तआला की ज़ात से होता है। इसलिए वह व्यक्ति जो अल्लाह तआला का फ़रमाँबरदार बन जाता है, वही मुस्लिम होता है क्योंकि वह ख़ुद को पूरी तरह अल्लाह तआला के हुक्मों के आगे झुका देता है। यही इस्लाम की सही तशरीह और उसका असली मतलब है

दूसरा संबंध इंसान का अपनी ज़ात और दूसरे इंसानों से होता है। इसलिए जो व्यक्ति अपनी ज़ात को फ़साद में पड़ने से बचाता है, शरारतों में लिप्त होने से बचाता है, बेईमानी, ख़यानत और ज़ुल्म से बचाता है, झूठ, फ़रेब, धोखा, बुग़ज़ और कीना से खुद को महफ़ूज़ रखता है

वह भी मुस्लिम है क्योंकि उसने अपनी जान को सलामती दी। उसी तरह जो व्यक्ति अपनी क़ौम के लोगों को लाभ पहुँचाता है, वह भी मुस्लिम है। जो अपने पड़ोसियों और रिश्तेदारों को अमन देता है और उनके लिए कोई फ़साद या खून-खराबा पैदा नहीं करता, वह भी मुस्लिम है।लेकिन जो व्यक्ति इसके उलट आचरण करता है, वह ग़ैर-मुस्लिम है, चाहे वह दिन-रात अपने आपको मुस्लिम क्यों न कहता रहे, क्योंकि नाम से किसी चीज़ की हक़ीक़त नहीं बदलती।

हम देखते हैं कि बच्चे कभी-कभी ऐसी हालत में जब उनके हाथ में कोई चीज़ नहीं होती, खेलते-खेलते दूसरे बच्चे के हाथ पर हाथ रखकर कहते हैं: “लो, मैं तुम्हें आम देता हूँ”, “खालो”, या “मैं पैसा देता हूँ”, “ले लो।”

जबकि उनके हाथ में कुछ नहीं होता। अब बच्चों का ऐसा फ़ेअल एक मज़ाक के तौर पर तो क़बूल किया जा सकता है इससे इतना फ़ायदा हो सकता है कि माँ-बाप या भाई-बहन हँस पड़ें, या जिसे ऐसा कहा गया वह समझे कि उससे मज़ाक किया गया है

लेकिन इससे कोई असली फ़ायदा नहीं होता। तुम कल्पनाओं में किसी को दुनिया की बादशाहत भी दे दो तो उसकी हालत में कोई बदलाव नहीं आएगा। लेकिन अगर हक़ीक़तन तुम किसी को एक पैसा भी दे दो, तो वह उससे फ़ायदा उठा सकता है।

ठीक यही हाल ईमान का है। अगर कोई व्यक्ति सिर्फ़ “मुस्लिम” के नाम से काम ले तो वह दुनिया को कोई फ़ायदा नहीं पहुँचा सकता। लेकिन अगर वह इस्लाम के मआना के मुताबिक़ थोड़े से भी अमल करे, तो बहुत कुछ फ़ायदा हासिल कर सकता है और दूसरों को भी असली फ़ायदा पहुँचा सकता है। (तफ़सीर कबीर, जिल्द 6, पृष्ठ 109 से 110, मुद्रित क़ादियान 2010)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

इस रमज़ान में जहाँ हमने यह संकल्प किए हैं कि हम इबादतों की ओर ध्यान देंगे, उच्च नैतिकताओं की ओर ध्यान देंगे, नेकियों को अपनाने की ओर ध्यान देंगे, अल्लाह तआला की तौहीद को फैलाने की ओर ध्यान देंगे तो फिर इसके लिए हमें कोशिश भी करनी होगी। और यह कोशिश केवल रमज़ान के समाप्त होते ही समाप्त नहीं होनी चाहिए, बल्कि पूरे साल लगातार जारी रहनी चाहिए।

ख़ुदा तआला ने हमें यह नसीहत दी है, यह हिदायत दी है कि तुम्हें हमेशा मेरे बंदों की तरह इबादत करने वाला बनना है और मेरी इबादतों का हक़ अदा करने की भरपूर कोशिश करनी है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "कश्ती-ए-नूह" को बार-बार पढ़ो। उसमें तुम्हारे लिए नसीहतें हैं। और जब तुम इसे बार-बार पढ़ोगे, इन नसीहतों पर अमल करोगे, और फिर अपनी ज़िंदगी को इसके अनुसार ढालने की कोशिश करोगे, और जो उसमें अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हुक्मों के मुताबिक़ अहकाम दर्ज हैं, उन्हें देखोगे, तो वही तुम्हारी कामयाब ज़िंदगी होगी और वही चीज़ है जो तुम्हें बैअत में फ़ायदा पहुँचाने वाली होगी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बड़े ताहद्दी से फ़रमाया कि हमारी जमाअत अल्लाह तआला की हिमायत में है, और दुख सहने से ईमान मज़बूत हो जाता है। सब्र जैसी कोई चीज़ नहीं।

क्या हमारी इबादतें सिर्फ रमज़ान के दिनों में ही अल्लाह तआला के लिए हो रही हैं? क्या हम स्थायी रूप से अपनी ज़िंदगी में इन इबादतों को अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बनाना चाहते हैं और बना भी रहे हैं? अगर ऐसा नहीं है, तो फिर कुछ भी नहीं। लेकिन अगर हम यह कर रहे हैं, और फिर सब्र से अल्लाह तआला की रज़ा पर राज़ी भी हैं और दुआएँ भी कर रहे हैं, तो अल्लाह तआला दुश्मनों से हमें निजात भी देगा। फिर तुम देखोगे कि अल्लाह तआला तुम्हें इन तकलीफ़ों से किस तरह बचाता है।

हमारी जमाअत के लिए ज़रूरी है कि इस अशांत और फ़ितनों से भरे दौर में, जब हर तरफ़ गुमराही और ग़फ़लत की हवा चल रही है, तक़्वा को अपनाएँ...
नौजवान भी, बुज़ुर्ग भी, औरतें भी, बच्चे भी हर किसी को अपना जायज़ा लेना चाहिए।

मेरे हाथ पर तौबा करना एक मौत चाहता है, ताकि तुम नई ज़िंदगी में एक और पैदाइश हासिल करो। (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

रमज़ानुल मुबारक के मौक़े पर हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आध्यात्मिक बातों की रोशनी में अहबाबे जमाअत को उपदेश।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 28 मार्च 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

अल्लाह तआला ने हमें यह तौफ़ीक़ दी कि हम इस रमज़ान से गुज़रे और आज इस रमज़ान का आख़िरी जुमा है। अल्लाह तआला का यह बहुत बड़ा एहसान है कि हम में से बहुतों को उसने इबादतों की भी तौफ़ीक़ दी और रोज़े रखने की भी तौफ़ीक़ दी। लेकिन इसके साथ ही हमें इस ओर भी ध्यान देना चाहिए कि सिर्फ़ रमज़ान के रोज़े रखने या रमज़ान में इबादतें करने से हमारा उद्देश्य पूरा नहीं हो जाता।

ख़ुदा तआला ने हमें यह नसीहत फ़रमाई है, यह हिदायत फ़रमाई है कि तुम्हें हमेशा मेरे इबादतगुज़ार बंदे बनकर रहना है और मेरी इबादतों का हक़ अदा करने की भरपूर कोशिश करनी है।

इसलिए इन दिनों में जिन लोगों को यह तौफ़ीक़ मिली कि नमाज़ों की ओर ध्यान दें, बाअजमाअत नमाज़ अदा करने की ओर ध्यान दें, नफ़्ल नमाज़ें अदा करने की ओर ध्यान दें, कुरआन करीम पढ़ने की ओर ध्यान दें और इस पर अल्लाह तआला ने उन्हें अमल की भी तौफ़ीक़ दी उनका अब यह फ़र्ज़ बनता है कि वे इन नेकीयों को जारी रखें। और जब यह नेकियाँ जारी रहेंगी तभी हम उस मक़सद को हासिल करने वाले बन सकते हैं, जिसे अल्लाह तआला ने इंसान की पैदाइश का मक़सद बताया है। और इसी ज़माने में हमने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सच्चे ग़ुलाम के हाथ पर बैअत कर के उस अहद की ताज़ा की है।

इसलिए इस पर अमल करने के लिए हमें अपनी भरपूर कोशिश अब जारी रखनी चाहिए और आज भी, और रमज़ान के जो दो-तीन या दो बाक़ी दिन हैं, उनमें भी दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला हमें इस रमज़ान के फ़ैज़ की वजह से आगे भी इन नेकीयों को जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, और हम रमज़ान के बाद उन नेकीयों को न भूल जाएँ जिन्हें हमने अल्लाह तआला के हुक्म से अंजाम दिया है। क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का तो यही फ़रमान है कि सच्चा मोमिन वही होता है, जिसे एक नमाज़ से दूसरी नमाज़ तक की फिक्र होती है, एक जुमा से दूसरे जुमा तक की फिक्र होती है, एक रमज़ान से दूसरे रमज़ान तक की फिक्र होती है यानी वह इनका इंतेज़ार करता है ताकि ये आयें और वह फिर इबादत करे। और इस दरमियानी समय में वह उन नेकीयों को भी अंजाम देता रहता है जिनका करने का अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है। और इस दौरान जो छोटी-छोटी ग़लतियाँ और गुनाह होते हैं, तो ये

इबादतें उनका कफ़्फ़ारा बन जाती हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ये कफ़्फ़ारा बन जाती हैं।

(सहीह मुस्लिम, किताबुत्तहारा, बाबुस्सलावातिल ख़म्स... हदीस 233)

इसलिए जिस तरह रमज़ान अहम है, उसी तरह हर नमाज़ और हर जुमा अहम है। यह नहीं कि रमज़ान का आख़िरी जुमा है तो वह मुबारक है हर जुमा मुबारक और बर्कत वाला है।

इस ज़माने में, जैसा कि मैंने कहा, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने भेजा और हमें उन्हें मानने की तौफ़ीक़ मिली। आपने अपनी जमाअत को बेशुमार नसीहतें कीं कि किस तरह तुम हक़ीक़ी मुसलमान बन सकते हो, किस तरह सच्चे मायनों में अल्लाह तआला के बंदे बन सकते हो, किस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत के सच्चे फ़र्द बन सकते हो। इसलिए इन बातों को हमें हमेशा याद रखना चाहिए।

एक मौक़े पर आपने नसीहत करते हुए फ़रमाया कि "मैंने बार-बार अपनी जमाअत से कहा है कि मेरी इस बैअत पर ही भरोसा मत करना। जब तक इसकी हक़ीक़त तक नहीं पहुँचोगे तब तक नजात नहीं। सतह पर रुकने वाला गहराई से महरूम रहता है।" आपने फ़रमाया कि "अगर मुरीद ख़ुद आमिल नहीं है अमल करने वाला नहीं है तो पीर की बड़ाई उसे कोई फ़ायदा नहीं दे सकती। यह कह देना कि मैं फ़लाँ पीर से बैअत में आ गया हूँ, मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में शामिल हो गया हूँ, अब मुझे बहुत कुछ मिल गया है आपने फ़रमाया, नहीं, यह नहीं हो सकता। जब तक हम ख़ुद अमल करने वाले नहीं बनते, उस वक़्त तक यह बैअत हमें कोई फ़ायदा नहीं पहुँचा सकती।"

आपने फ़रमाया, "इसकी मिसाल इस तरह है जैसे कोई किसी हकीम के पास जाए और वह हकीम एक नुस्ख़ा दे और वह नुस्ख़ा लेकर रख ले तो उससे कोई फ़ायदा नहीं होगा। फ़ायदा तो उसी सूरत में होगा जब उस हकीम के नुस्ख़े से इलाज करे, दवाइयों को इस्तेमाल करे।"

इसलिए आपने फ़रमाया, "मैंने एक किताब लिखी है कश्ती-ए-नूह। इस कश्ती-ए-नूह को बार-बार पढ़ो। इसमें तुम्हारे लिए नसीहतें हैं। और जब इसे बार-बार पढ़ोगे, नसीहतों पर अमल करोगे, और फिर अपनी ज़िंदगियों को इसके मुताबिक ढालने की कोशिश करोगे, और जो इसमें अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हुक्मों के मुताबिक अहकाम दर्ज हैं उन्हें देखोगे तो वही तुम्हारी कामयाब ज़िंदगी होगी और वही चीज़ है जो तुम्हें बैअत में फ़ायदा देने वाली होगी।"

आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला तो फ़रमाता है कि वह आदमी फ़लाह पा गया जो पाक हो गया, यानी قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا (अश्शम्स:10)—जिसने अपने नफ़्स को पाक किया, वह अपने मक़सद को पा गया। जब तुम इस पर अमल करोगे तो तभी तुम्हें फ़ायदा होगा।

आपने मिसाल देते हुए फ़रमाया कि हज़ारों चोर हैं, ज़ानी हैं, बदकार हैं, शराबी हैं, बदमाश हैं और वे दावा करते हैं कि हम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की उम्मत में से हैं। मगर क्या वे हक़ीक़त में ऐसे हैं? क्या वे इस लायक़ हैं कि उन्हें उम्मती कहा जाए? फ़रमाया: हरगिज़ नहीं। यह नहीं हो सकता। उम्मती वही है जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तालीमात पर पूरी तरह अमल करने वाला हो।

(मअख़ूज़: मल् फ़ूज़ात, जिल्द 4, सफ़ा 232–233, एडिशन 1984)

और अगर कोई शिक्षाओं पर अमल नहीं कर रहा, तो वह उम्मती नहीं कहलाया जा सकता। यह तो हमारे प्यारे नबी हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की बदनामी का कारण बनेगा। अतः हमें हमेशा इस बात को याद रखना चाहिए कि हमें अपने आचरण को उस इस्लामी शिक्षा के अनुसार ढालना है, जो अल्लाह तआला के आदेश हैं, जिनकी ओर रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हमें मार्गदर्शन दिया है, और इस युग में जिनकी ओर हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है।

आप (अलैहिस्सलाम) ने एक स्थान पर फ़रमाया कि जब तुम इस जमाअत में दाखिल हुए हो तो इसकी शिक्षा पर अमल करो। फ़रमाया कि जमाअत में शामिल होने के बाद तकलीफ़ें भी आती हैं। यदि तकलीफ़ें न हों, तो फिर सवाब की उम्मीद कैसे हो सकती है? फ़रमाया कि नबी-ए-करीम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने मक्का में तेरह वर्षों तक कष्ट सहे और तुम्हें तो आज के ज़माने की तकलीफ़ों का अंदाज़ा ही नहीं है। अतः हमेशा याद रखो कि कष्ट तो अवश्य होंगे, लेकिन जब मक्का में सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) को और स्वयं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को ये तकलीफ़ें मिल रही थीं, तब भी आपने सब्र की शिक्षा दी थी। और उसका परिणाम क्या निकला? परिणाम यह निकला कि अन्ततः दुश्मन नष्ट हो गया। फ़रमाया कि तुम देखोगे कि जो शरारती लोग हैं, जो तुम्हारा विरोध करते हैं, वे भी उस समय दिखाई नहीं देंगे।

आज के दौर में भी यही हालात हैं। अल्लाह तआला ने इरादा कर लिया है कि वह इस जमाअत को संसार में फैलाएगा। फ़रमाया कि ये लोग तुम्हें थोड़े जानकर दुःख देते हैं, लेकिन जब जमाअत अधिक हो जाएगी तो ये स्वयं चुप हो जाएँगे। यही दुनिया का नियम रहा है। यही हम नबियों की जमाअत के इतिहास में देखते हैं। फ़रमाया कि यदि अल्लाह चाहता तो ये लोग दुःख न देते और दुःख देने वाले पैदा न होते, मगर अल्लाह तआला उनके माध्यम से सब्र की शिक्षा देना चाहता है। अल्लाह तआला हर प्रकार की शक्ति का स्वामी है, वह इन ज़ालिमों के हाथों को रोक सकता है, लेकिन वह हमें भी आज़माना चाहता है कि हमारे भीतर कितना सब्र है और हम अल्लाह तआला से कितना संबंध स्थापित करते हैं।

क्या केवल रमज़ान के दिनों में हमारी इबादतें अल्लाह तआला के लिए होती हैं? क्या हम अपनी ज़िन्दगी में उन इबादतों को स्थायी रूप से शामिल करना चाहते हैं और कर भी रहे हैं? यदि ऐसा नहीं है, तो फिर कुछ भी नहीं। लेकिन यदि हम वास्तव में यह कर रहे हैं, और सब्र के साथ अल्लाह की रज़ा में रज़ामंद हैं और दुआएं कर रहे हैं, तो अल्लाह तआला हमें दुश्मनों से भी निजात देगा। फिर तुम देखोगे कि अल्लाह तआला किस तरह से तुम्हें इन तकलीफ़ों से बचाएगा।

फ़रमाया कि सब्र भी एक इबादत है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि सब्र करने वालों को वह ऐसे बदले देगा जिनका कोई हिसाब नहीं यानी उन्हें बेहिसाब इनाम मिलेंगे। यह इनाम केवल सब्र करने वालों के लिए है। दूसरी इबादतों के बारे में अल्लाह तआला ने ऐसा वादा नहीं किया है। जब कोई व्यक्ति एक जमाअत के साथ जीवन व्यतीत करता है, और बार-बार उसे दुःख पहुंचते हैं, तो अन्ततः समर्थन करने वाले को ग़ैरत आती है और वह दुःख देने वाले को नष्ट कर देता है यानी अल्लाह तआला को फिर ग़ैरत आएगी जब हम सब्र करेंगे, उसके आगे झुकेंगे और दुआएँ करेंगे। कुछ लोग बेसब्री का प्रदर्शन कर देते हैं। यह ठीक है कि हमें विशेष रूप से पाकिस्तान में बहुत तकलीफ़ें हो रही हैं, लेकिन अल्लाह तआला ने हमसे यही उम्मीद की है और हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने भी हमें यही फ़रमाया है कि सब्र करो। सिर्फ़ इतना नहीं कि हमने इस रमज़ान में दुआएं कर ली हैं, बल्कि हमें इन दुआओं और अच्छे कार्यों को अपनी ज़िन्दगी का स्थायी हिस्सा बनाना होगा, तभी हमें लाभ मिलेगा।

आप (अलैहिस्सलाम) ने बहुत दृढ़ता के साथ फ़रमाया कि हमारी जमाअत अल्लाह तआला की सहायता में है, और दुःख उठाने से ईमान मज़बूत होता है। सब्र जैसी कोई चीज़ नहीं।

(उद्धृत: मल्फ़ूज़ात, जिल्द 4, सफ़ा 235, एडिशन 1984)

अतः ये वे बातें हैं जिन्हें यदि हम याद रखें तो इंशा अल्लाह तआला, हम प्रगति करते रहेंगे, और दुश्मन हमारे कार्यों में कभी कोई रुकावट नहीं डाल सकता, हमारे योजनाओं में कोई रुकावट पैदा नहीं कर सकता। लेकिन शर्त यही है कि हमारे अपने कार्य अच्छे हों और हम हर काम केवल अल्लाह तआला की रज़ा के लिए करें।

एक स्थान पर आपने फ़रमाया अब तुम रुख दुनिया की ओर न रखो बल्कि अल्लाह तआला की ओर मुख करो।

(उद्धृत: मल्फ़ूज़ात, जिल्द 4, सफ़ा 71, एडिशन 1984)

और जब तुम अल्लाह तआला की ओर मुख करोगे, तो फिर तुम देखोगे कि अल्लाह तआला तुम्हारे लिए किस तरह से आसानीयाँ पैदा करता है।

फिर आपने तक़वा के बारे में नसीहत करते हुए फ़रमाया कि इतिहास गवाही देता है कि प्रारंभ में जब कोई व्यक्ति सच्चा मुसलमान होता है, तो उसे सब्र करना पड़ता है। सहाबा (रज़ियल्लाहु अन्हुम) पर भी ऐसा ही समय आया जब उन्होंने पत्ते खाकर गुज़ारा किया। कई बार रोटी का टुकड़ा भी मयस्सर नहीं आता था। फ़रमाया कि कोई इंसान किसी दूसरे के लिए भलाई नहीं कर सकता जब तक कि अल्लाह तआला भलाई न चाहे। जब अल्लाह तआला भलाई करना

चाहता है, तो तब ही लोगों की ओर से भी भलाइयाँ आती हैं। जब इंसान तक़्वा अपनाता है, तो फिर अल्लाह तआला उसके लिए दरवाज़े खोल देता है। यह तुम्हारा भ्रम है कि लोग तुम्हारे लिए भलाई करेंगे, लेकिन यदि अल्लाह तआला की अभी यह इच्छा नहीं कि तुम्हारे लिए भलाई हो, तो लाख कोशिश कर लो, लोग तुम्हारे लिए भलाई नहीं कर सकते। नेकी पर चलने के लिए अल्लाह तआला की ओर झुकना आवश्यक है और जब उसकी रज़ा प्राप्त होगी, और जब हम तक़्वा पर चलने लगेंगे, तो फिर अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल के दरवाज़े भी खोलेगा, इंशा अल्लाह। इसलिए आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला पर सच्चा ईमान लाओ। उसी से सब कुछ प्राप्त होगा, क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है:

"जो अल्लाह का डर रखता है, उसके लिए वह रास्ता निकाल देता है और उसे वहां से रोज़ी देता है जहाँ से उसे गुमान भी नहीं होता।"

(सूरह अत-तलाक़ 3-4)

(उद्धृत: मल्फ़ूज़ात, जिल्द 4, सफ़ा 204, एडिशन 1984)

जो कोई अल्लाह तआला का तक़्वा इख़्तियार करता है, अल्लाह उसके लिए कोई राह निकाल देता है और उसे वहाँ से रिज़्क़ देता है जहाँ से रिज़्क़ आने का गुमान भी नहीं होता। वहाँ से सहूलतें प्रदान करता है जहाँ से उम्मीद भी नहीं होती। अतः यदि हमें अपने जीवन को सफल बनाना है और उस बरकत से लाभ उठाना है जो रमज़ान की या हर रमज़ान की बरकत होती है, तो हमें इन बातों को सदैव याद रखना चाहिए।

फिर हक़ूक़ुल इबाद के बारे में भी आपने कहा कि आपस में प्रेम से मिल-जुलकर बैठो। जितनी अधिक तुम आपस में एक-दूसरे से प्रेम करोगे, उतनी ही अधिक अल्लाह तआला तुमसे प्रेम करेगा।

(उद्धृत: मल्फ़ूज़ात, जिल्द 4, सफ़ा 228। एडिशन 1984)

अब केवल बाहरी इबादतें नहीं, बल्कि रमज़ान के दिनों में जो उच्च नैतिक व्यवहार की ओर हमारी रुचि जागृत होती है बहुत से लोगों में यह होता है और वे बताते भी हैं अब यह आवश्यक है कि उन अच्छे आचरणों को हम सदैव जारी रखें और छोटी-छोटी बातों, छोटे-छोटे झगड़ों, और मामूली मसलों पर आपसी जो मतभेद उत्पन्न होते हैं, उन्हें समाप्त करें और प्रेम व सौहार्द्र का जीवन बिताएँ। जब हम ऐसा करेंगे, तभी अल्लाह तआला की बरकतों की बारिश हम पर बरसेगी।

फिर एक स्थान पर आपने उपदेश देते हुए कहा कि हमारी जमाअत के लिए आवश्यक है कि इस अशांत समय में, जबकि हर ओर गुमराही, गफ़लत और पथभ्रष्टता की हवा चल रही है, तक़्वा इख़्तियार करें।

देखिए, आजकल कौन-सा ऐसा माध्यम है जो गुमराही की ओर ले जाने के लिए प्रयुक्त नहीं हो रहा? हर प्रकार का प्रयास हो रहा है। हर प्रकार का मीडिया इस समय इसी काम में लगा हुआ है। दुनियादारों ने हर माध्यम को गुमराही, ग़फ़लत और अल्लाह तआला से दूर करने का ज़रिया बना लिया है। ऐसे समय में जो यह दावा करते हैं कि हमने इस युग में इस्लाम के पुनर्जागरण और दीन की ताज़ा तामीर के लिए मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को स्वीकार किया है, हमारा काम यह है कि हम इन चीज़ों से बचने का प्रयास करें। स्वयं मूल्यांकन करें कि हम में से कितने हैं जो इनसे बचते हैं।

नौजवान हों, वृद्ध हों, महिलाएँ हों, बच्चे हों हर किसी को आत्मनिरीक्षण करना चाहिए।

आपने फरमाया कि दुनिया की यह हालत है कि अल्लाह तआला के आदेशों की कोई अहमियत नहीं रही। हक़ और वसीयतों की परवाह नहीं रही। अल्लाह तआला ने जो नसीहतें कीं, उनकी कोई चिंता नहीं। दुनिया और उसके कामों में हद से ज़्यादा उलझाव है। यदि हम अपने भीतर झाँकें तो यही बातें हमारे अंदर भी हैं कि हम दुनियावी कामों में अधिक लिप्त हैं। कभी-कभी तो हम नमाज़ पढ़ना भूल जाते हैं। कुछ लोग जुमा की भी परवाह नहीं करते। कुछ अन्य नेकी के कार्यों की भी परवाह नहीं करते। अपना हक़ लेने के लिए दूसरों का हक़ मारने की कोशिश करते हैं। तो ये बातें ऐसी हैं जो अल्लाह तआला का क़ुरबत दिलाने वाली नहीं हो सकतीं।

अतः जब एक ओर हम रमज़ान में यह दुआ कर रहे होते हैं कि अल्लाह तआला हमें नेकियों की तौफ़ीक़ दे, हमारी ज़रूरतें पूरी करे तो फिर हमें भी उन बातों पर अमल करना होगा जो अल्लाह तआला ने हमें बताई हैं। कोशिश भी करनी होगी, केवल दुआ से काम नहीं चलेगा। आपने फरमाया कि दुनियादारी में पड़े हुए लोग जब दुनियावी नुक़सान होता है तो बहुत शोर मचाते हैं, रोते-धोते हैं, और दुनियावी नुक़सान से बचने के लिए जैसा कि मैंने पहले कहा अल्लाह तआला के हक़ को ज़ाया कर देते हैं। इस दुनिया का नुक़सान न हो, अल्लाह का हक़ अदा हो या न हो कोई फ़र्क नहीं पड़ता। वे उन बातों की ओर ध्यान नहीं देते जो अल्लाह तआला ने कही हैं। लोगों के हक़ अदा नहीं करते। मुक़द्दमेबाज़ी में पड़ जाते हैं। ग़लत तरह के मुक़द्दमे होते हैं। फिर एक-दूसरे को नीचा दिखाने के लिए लोग यह भी कर रहे होते हैं कि ग़लत दलीलें दे रहे होते हैं। वकीलों की सलाह पर झूठी बातें पेश कर रहे होते हैं। झूठी गवाहियाँ दे रहे होते हैं। तो ऐसी हालत में फिर कैसे मुमकिन है कि अल्लाह तआला हमारा साथ दे? अगर अल्लाह तआला का साथ चाहिए तो फिर यह ज़रूरी है कि हम नेकियों की ओर ध्यान दें और अल्लाह तआला के आदेशों पर अमल करने की कोशिश करें। आपने फरमाया कि जब तक कमज़ोर होते हैं तो गुनाह करने का साहस नहीं होता। गुनाह नहीं करते जब तक कमजोरी है। अल्लाह की ओर रुझान होता है। और जब मौका मिला तो तुरंत झूठ और गुनाह करने लगते हैं। जब आसानी और समृद्धि आती है तो भूल जाते हैं कि अल्लाह ने हमें ये सहूलतें दी हैं और उससे पहले जो हमारी हालत थी वह क्या थी। अल्लाह का शुक्राना तो यही है कि हम उन नेकियों को जारी रखें जो हमने अपनी कमजोरी में की थीं। और कभी अल्लाह और उसके बंदों का हक़ ग़بب करने की कोशिश न करें। अगर हम हक़ मार रहे हैं तो इसकी वजह यही है कि सच्चा तक़्वा नहीं है। आपने फरमाया कि सच्चा तक़्वा हो तो इंसान ऐसी हरकतें कर ही नहीं सकता। आपने फरमाया कि बहुत कुछ हिस्सा हदीसों में मौजूद है और बरकात भी हैं, मगर दिलों में ईमान और अमली हालत बिल्कुल नहीं है। कुछ लोग हैं जो बातें तो करते हैं हदीसों और क़ुरआन की, मगर अमल और ईमान इतना नहीं होता कि उन बातों पर अमल कर सकें। आप फरमाते हैं कि अल्लाह तआला ने मुझे इसलिए मबऊस किया है कि ये बातें फिर से ज़िंदा हों।

जब अल्लाह ने देखा कि मैदान खाली है तो उसकी अलूहियत की तलब ने हरगिज़ यह गवारा न किया कि यह मैदान खाली रहे और लोग यूँ ही दूर पड़े रहें। इसलिए अब उनके मुक़ाबले में अल्लाह तआला एक नई क़ौम ज़िंदा लोगों की पैदा करना चाहता है। इसलिए हमारी तबलीग़ यह है कि तक़्वा की ज़िंदगी अपनाई जाए।

(माख़ूज़: मल्फ़ूज़ात, जिल्द 4, सफ़ा 395-396 एडिशन 1984)

इसलिए हम एक नई क़ौम बने हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आए हैं, तो हमें तक़्वा की ज़िंदगी अपनानी पड़ेगी और अपनानी चाहिए। फिर आपने फ़रमाया कि तक़्वा कोई ऐसी चीज़ नहीं है जो केवल मुँह से पा ली जाए। बल्कि शैतान इसमें बहकाता है।

(मअख़ूज़: मल्फ़ूज़ात, ज़िल्द 4, सफ़ा 398, हाशिया, एडीशन 1984)

तक़्वा करने वालों को भी बहकाता है। शैतान तक़्वा करने वालों को भी गुमराही में डालने की कोशिश करता है। आपने मिसाल दी है "जैसे ज़रा सी मिठाई रख दी जाए तो बहुत सी चींटियाँ उस पर आ जाती हैं।" उसी तरह शैतानी गुनाहों का हाल है और इससे इंसानी कमज़ोरी का भी पता चलता है। इंसान समझता है कि वह बहुत नेक हो गया है, बहुत तक़्वा पर चल रहा है, लेकिन जब शैतान हमला करता है तो मालूम होता है कि अब भी वह पूरी तरह अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में नहीं आया।

फ़रमाया कि "अगर ख़ुदा चाहता तो इंसान में ऐसी कमज़ोरी न होती।" थोड़ी-सी नेकी करके इंसान समझने लगता है कि वह तक़्वा पर चल रहा है, लेकिन यह असली तक़्वा नहीं है। यह वह तक़्वा है जिस पर शैतान हमले करता है। जिस तरह मीठे पर चींटियाँ चढ़ जाती हैं, उसी तरह शैतान भी ऐसे इंसान को भड़काने के लिए हमला कर देता है ताकि वह अपने आपको बहुत बड़ा नेक समझने लगे। जब इंसान की यह हालत हो जाती है, तो वह नेकी से दूर हो जाता है, उसमें तकब्बुर पैदा हो जाता है।

इसलिए आपने फ़रमाया कि तक़्वा पर चलने वालों को बहुत सोच-समझकर क़दम उठाने पड़ते हैं और यह तब ही हो सकता है जब इंसान इस बात को समझे कि हर ताक़त का स्रोत केवल अल्लाह ही है। किसी नबी या रसूल को

यह ताक़त नहीं है कि वह अपने पास से किसी को ताक़त दे सके। हाँ, नबियों और रसूलों से बरकात हासिल होती हैं। उनकी तालीम पर अमल करने से बरकत मिलती है, लेकिन ताक़त अल्लाह ही के पास है और नबी और रसूल भी उसी की तरफ़ ले जाते हैं। जब यह ताक़त अल्लाह की तरफ़ से इंसान को मिलती है, तभी उसमें तब्दीली आती है।

उसके पाने के लिए ज़रूरी है कि दुआ से काम लिया जाए और नमाज़ ही एक ऐसी नेकी है जिससे शैतानी कमज़ोरी दूर होती है और यही दुआ कहलाती है। शैतान चाहता है कि इंसान इस में कमज़ोर बना रहे क्योंकि वह जानता है कि जितनी भी इस्लाह इंसान अपनी कर सकता है, वह नमाज़ ही के ज़रिए कर सकता है। इसलिए इसके लिए पाक व साफ़ होना शर्त है। जब तक गंदगी इंसान के अंदर रहती है, शैतान उससे मोहब्बत करता है।

(मल्फ़ूज़ात, ज़िल्द 4, सफ़ा 398, एडीशन 1984)

इसलिए पाक-साफ़ होने के लिए नमाज़ शर्त है। और इस रमज़ान में हमने इसका फ़ायदा उठाया कि नमाज़ों की तरफ़ ध्यान दिया जाए, उन्हें बाक़ायदगी से अदा किया जाए। नफ़्लों की तरफ़ ध्यान दिया जाए। आपने फ़रमाया कि अगर शैतान से हमेशा के लिए बचना है और तक़्वा पर क़दम बढ़ाना है, तो फिर इसकी शर्त यही है कि इबादत की तरफ़ तवज्जोह हो। वह इबादत जो संवार कर की जाए, जो अल्लाह तआला के हुक्मों के मुताबिक हो, जिसमें किसी किस्म का दिखावा न हो। और जब ऐसी इबादतें होंगी, तो फिर इंसान हमेशा शैतान के हमलों से बचा रहेगा और अल्लाह तआला की पनाह में रहेगा।

फिर आपने तक़्वा के बारे में यह भी फ़रमाया कि मुत्तक़ी बनने के लिए ज़रूरी है कि वह केवल बड़ी बुराइयाँ जैसे ज़िना, चोरी, हक़ तल्फ़ी, दिखावा, घमंड, तौहीन, बुख़्ल से बचे ही नहीं, बल्कि इनकी जगह अच्छे अख़लाक़ अपनाए। यानी केवल गंदे अख़लाक़ से बचना काफ़ी नहीं है, बल्कि उनके मुक़ाबले में अच्छे अख़लाक़ों में तरक़्क़ी करनी चाहिए। यह असल तक़्वा है कि बुराइयों से बचकर नेकियों की तरफ़ क़दम बढ़ाया जाए। बुरे अख़लाक़ को छोड़कर अच्छे अख़लाक़ अपनाना ही हक़ीक़ी तक़्वा है।

सिर्फ़ बुराई से बचना तक़्वा नहीं है, बल्कि बुराई से बचकर नेकी को अदा करना तक़्वा है।

इसके अलावा नेकियों में और क्या चीज़ें हैं लोगों के साथ नरमी से पेश आना, ख़ुशअख़लाक़ी दिखाना, हमदर्दी से पेश आना, अल्लाह तआला के साथ सच्ची वफ़ादारी और सिद्क़ दिखाना, और ऐसे नेक कामों की तलाश करना जो अल्लाह को पसंद हों और क़ाबिले तारीफ़ हों। इन्हीं बातों की बुनियाद पर इंसान मुत्तक़ी कहलाता है। आपने फ़रमाया कि जब ये बातें इंसान में पैदा हो जाएं, तो वही लोग मुत्तक़ी होते हैं।

फिर आपने फ़रमाया कि जब लोग ऐसे हो जाते हैं, तो अल्लाह तआला उनका सरपरस्त बन जाता है, क्योंकि अल्लाह ख़ुद फ़रमाता है :

لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (البقرة:39)

कि उन पर न तो कोई ख़ौफ़ होगा और न ही वे ग़मगीन होंगे।

और एक जगह फ़रमाता है:

"وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ" (الأعراف : 197)

और वह नेक लोगों का ही क़फ़ील बनता है।

हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह तआला उसके हाथ हो जाता है जिससे वह पकड़ता है, उसकी आँख हो जाता है जिससे वह देखता है, उसके कान हो जाता है जिससे वह सुनता है, और उसके पाँव हो जाता है जिससे वह चलता है।

एक हदीस में यह भी है कि जो मेरे वली से दुश्मनी करता है, मैं उससे कहता हूँ कि मेरे मुक़ाबले के लिए तैयार हो जाओ।

फिर एक जगह फ़रमाया कि जब कोई ख़ुदा के वली पर हमला करता है, तो ख़ुदा तआला उस पर ऐसे झपटता है जैसे कोई उसके बच्चे को छीने तो एक शेरनी झपट पड़ती है। आपने फ़रमाया कि ख़ुदा तआला की रहमत इसी तरह मिलती है। जब इंसान का क़दम अल्लाह की तरफ़ बढ़ता है तो अल्लाह का क़दम भी उसकी तरफ़ बढ़ता है। अल्लाह तआला की रहमतें हर एक के साथ नहीं होतीं। इसलिए जिन पर होती हैं, वे उनके लिए निशान बन जाती हैं।

अब हज़रत सैयदना मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ सबसे ज़्यादा निशान दिखाए गए। दुश्मनों ने आपकी नाकामी के लिए क्या-क्या कोशिशें नहीं कीं, लेकिन एक भी पूरी न हो सकी। यहाँ तक कि क़त्ल के लिए भी मंसूबे बनाए गए, मगर आख़िरकार सब नाकाम हुए।

फ़रमाया कि अपने दिलों में ख़ुदा की मोहब्बत और अज़मत का सिलसिला ज़िंदा रखो और इसके लिए नमाज़ से बढ़कर कोई चीज़ नहीं। असली चीज़ यही है कि अल्लाह के हुज़ूर अपनी नेकियाँ पेश की जाएँ और उसकी इबादत का हक़ अदा किया जाए। और इसके लिए सबसे आला चीज़ आपने फ़रमाया नमाज़ है।

इसलिए रमज़ान से जो हम गुज़रे हैं, नमाज़ों की हालत से जो हम गुज़रे हैं, नेकियों की हालत से जो गुज़रे हैं, अब उन्हें जारी रखना और अल्लाह तआला की रहमत को हासिल करने के लिए इन्हें अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बनाना ज़रूरी है। इसके बग़ैर गुज़ारा नहीं। आपने फ़रमाया कि रोज़े तो एक साल के बाद आते हैं। ज़कात मालदार को देनी पड़ती है। जिसके पास माल है, उसी पर ज़कात फ़र्ज़ है, हर एक को तो ज़कात देनी नहीं होती। यह भी एक नेकी है, मगर नमाज़ वह है जिसे हर हैसियत का आदमी पाँच वक़्त अदा करता है। अमीर हो या ग़रीब, बड़ा हो या छोटा, उसे नमाज़ अदा करनी है। इसे हरगिज़ ज़ाया न करो। इसे बार-बार पढ़ो और इस एहसास के साथ पढ़ो कि मैं एक ऐसी ताक़त वाले के सामने खड़ा हूँ कि अगर उसका इरादा हो जाए, तो अभी मेरी दुआ क़बूल कर ले।

ऐसा पुख़्ता ईमान होना चाहिए कि मैं अल्लाह तआला के सामने खड़ा हूँ जो इतनी ताक़त वाला है कि अगर वह चाहे तो मेरी दुआ को उसी वक़्त क़बूल कर ले। फ़रमाया कि दुनिया के दूसरे हाकिम तो ख़ज़ानों के मोहताज होते हैं। उन्हें यह फिक्र रहती है कि ख़ज़ाना ख़ाली न हो जाए। उनके ख़ज़ाने आते हैं, भरते हैं, लेकिन साथ ही यह डर भी रहता है कि कहीं हम बेतहाशा खर्च करते जाएं तो हमारे ख़ज़ाने ख़ाली न हो जाएँ।

आज की पश्चिमी दुनिया, जो अपने आपको बहुत अमीर समझती थी, उनके यही हालात हैं। समझते थे कि हमारे पास बहुत दौलत है, कभी ख़त्म नहीं होगी, लेकिन अब बहुत बुरे हालात हो रहे हैं। हर एक की मआश (आर्थिक व्यवस्था) तबाही की तरफ़ जा रही है। महंगाई बढ़ रही है, रुपये की क़ीमत गिर रही है, पाउंड की क़ीमत गिर रही है, डॉलर की क़ीमत गिर रही है और एक फ़साद फैल गया है। उन्हें फिक्र लग गई है, इसीलिए उन्होंने बहुत सारी पाबंदियाँ भी लगा दी हैं...

लेकिन ख़ुदा तआला का ख़ज़ाना हर समय भरा हुआ है। जब इंसान उसके सामने खड़ा होता है, तो उसे केवल यक़ीन की ज़रूरत होती है।

यह यक़ीन होना चाहिए कि अल्लाह तआला में तमाम शक्तियाँ हैं और उसके ख़ज़ाने हमेशा भरे हुए हैं और भरे रहेंगे। जब यह यक़ीन हो और फिर वह उससे माँगता है, तो फिर अल्लाह तआला में यह ताक़त है कि वह दुआओं को क़बूल करके उसी वक़्त अता भी कर दे। फ़रमाया कि उसे इस बात पर यक़ीन हो कि मैं एक ऐसे ज़ात के सामने खड़ा हूँ जो समईउल अलीम, ख़बीर और क़ादिर है। अगर उस पर मेहर आ जाए, उसकी मेहरबानी हो जाए, तो वह अभी अता कर देता है। इंसान को चाहिए कि बड़ी गिड़गिड़ाहट से दुआ करे। नाउम्मीदी और बदगुमानी हरगिज़ नहीं होनी चाहिए। अगर ऐसा करे तो वह राहत जल्दी देखेगा और अल्लाह तआला के और और फ़ज़्ल भी उसमें शामिल होंगे। अगर इंसान ऐसी हालत पैदा करेगा तो फिर अल्लाह तआला के फ़ज़्ल उसे हासिल होंगे और ख़ुद अल्लाह भी मिलेगा। यही वह तरीक़ा है जिस पर कारबंद होना चाहिए। लेकिन ज़ालिम और फ़ासिक़ की दुआ क़बूल नहीं होती, क्योंकि वह अल्लाह तआला से लापरवाह होता है। एक बेटा अगर अपने बाप की परवाह न करे और बदनसीब हो, तो बाप को उसकी परवाह नहीं होती तो अल्लाह को क्यों होगी।

(उद्धृत : मल्फ़ूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 400 से 402, संस्करण 1984)

आप ने फ़रमाया : हमारी जमाअत को चाहिए कि अल्लाह तआला से सच्चा संबंध पैदा करें और अपनी ईमानी ताक़तों को यक़ीन की हद तक पहुँचाने की कोशिश करें और यही वह उद्देश्य है जिसके लिए मैं आया हूँ।

और अगर यह उद्देश्य हासिल करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं तो आपने फ़रमाया कि मेरी बैअत का कोई फ़ायदा नहीं है। इसलिए हमें यही कोशिश करनी चाहिए कि अपनी नेकियों को बढ़ाते चले जाएँ और अल्लाह तआला से ख़ास संबंध पैदा करें। और यही हमारी ज़िंदगियों का मक़सद है। यही वह चीज़ है जो जमाअत की तरक़्क़ी में हमारे लिए फ़ायदा देने वाली है। यही वह चीज़ है जो हमें

मुश्किलों और मुसीबतों से बचाएगी। और इसी के ज़रिए जमाअत, इंशा अल्लाह तआला, तरक़्क़ी करते हुए उस मुक़ाम तक पहुँचेगी जिसका अल्लाह तआला ने वादा फ़रमाया है।

आप ने फ़रमाया कि मसीह मौऊद के जो काम हैं उनमें से पहला यही है। अल्लाह तआला जो निशान दिखा रहा है, वह वही निशान हैं जो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के ज़माने में दिखाए गए थे और उसी सिलसिले में अब भी वह निशान दिखाए जा रहे हैं। ख़ुद तरक़्क़ी के निशान दिखाए जा रहे हैं और यह सिलसिला अब भी जारी है। आप ने फ़रमाया कि यह निशान इसलिए दिखाए जा रहे हैं ताकि अल्लाह तआला यह साबित करे कि वह हमारी दुआओं को सुनने वाला है और उनका जवाब भी देता है और हमारी मदद उसके साथ है।

फिर आपने फ़रमाया कि मेरे आने का दूसरा उद्देश्य यह है कि अल्लाह तआला से बंदों का संबंध पैदा करवाया जाए। एक अमल अल्लाह तआला का है आपने फ़रमाया कि एक अमल अल्लाह तआला का है जो उसने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से वादा किया था, वह उसे पूरा कर रहा है। दूसरा, अल्लाह तआला ने हमें यह ज़िम्मेदारी दी है कि हम उसके शुक्रगुज़ार बंदे बनें और उसकी इबादत का हक़ अदा करने वाले हों और अपने ईमानों में तरक़्क़ी करने वाले हों। जब ऐसा होगा, तो हम अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को हासिल करने वाले होंगे और उस बैअत का हक़ अदा करने वाले होंगे जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का हमारा उद्देश्य है।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हमारी जमाअत के लिए ज़रूरी है कि उनका ईमान बढ़े, अल्लाह तआला पर सच्चा यक़ीन और मारिफ़त पैदा हो। नेक आमाल में सुस्ती और काहिली नहीं होनी चाहिए, क्योंकि अगर सुस्ती हो तो फिर वुज़ू करना भी एक मुसीबत लगने लगता है तहज्जुद पढ़ना तो बहुत दूर की बात है। अगर आमाल-ए- सालेहा की ताक़त पैदा न हो और "मुसाबक़त फ़ी खैरात" (नेकियों में आगे बढ़ने) का जोश पैदा न हो, तो हमारे साथ संबंध बनाना बेकार है।

अगर आप अपने अंदर बदलाव नहीं ला रहे, अपने अंदर नेकियाँ पैदा करने का कोई जोश नहीं है, अल्लाह तआला की इबादत का जोश और अच्छे अख़्लाक़ दिखाने का जोश पैदा नहीं हो रहा तो फिर मेरी बैअत में आने का कोई फ़ायदा नहीं है।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हमारी जमाअत में वही शामिल होता है जो हमारी तालीम को अपने लिए दस्तूर-उल-अमल बनाता है और अपनी हिम्मत और कोशिश के मुताबिक़ उस पर अमल करता है। लेकिन जो सिर्फ़ नाम रखकर तालीम के मुताबिक़ अमल नहीं करता, वह याद रखे कि अल्लाह तआला ने इस जमाअत को एक ख़ास जमाअत बनाने का इरादा किया है और कोई व्यक्ति महज़ नाम लिखवाने से इस जमाअत में नहीं रह सकता। उस पर कोई न कोई वक़्त ऐसा आता है कि वह बदक़िस्मती से अलग हो जाता है और हो जाएगा। इसलिए जहाँ तक हो सके अपने आमाल को उस तालीम के मुताबिक़ बनाओ जो दी जा रही है।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि आमाल परों की तरह हैं। बिना आमाल के इंसान रूहानी मरातिब की परवाज़ नहीं कर सकता। जिस तरह परिंदे हवा में परों से उड़ते हैं, उसी तरह आमाल भी रूहानी दर्जे ऊँचा करने के लिए ज़रूरी हैं। अगर आमाल होंगे तो इंसान ऊपर उड़ सकता है, अल्लाह तआला के क़रीब जा सकता है। बिना आमाल के इंसान रूहानी मरातिब की परवाज़ नहीं कर सकता और उन ऊँचे मक़ासिद को हासिल नहीं कर सकता जो उनके नीचे अल्लाह तआला ने रखे हैं।

फ़रमाया कि परिंदों में भी फ़हम होता है, उनमें भी अक़्ल होती है। अगर वह उस अक़्ल और फ़हम से काम न लें जो अल्लाह तआला ने उनकी फ़ितरत में रखी है तो वह काम नहीं कर सकते जो उनसे लिए जाते हैं। मसलन, अगर शहद की मक्खी में फ़हम न हो तो वह शहद नहीं बना सकती। इसी तरह नामाबर कबूतर जो पहले बहुत इस्ते'माल होते थे उन्हें भी किसी हद तक अपने फ़हम से काम लेना पड़ता है। वह कितनी दूर-दराज़ की मंज़िलें तय करते हैं और ख़त पहुँचाते हैं। इसी तरह परिंदों से अजीब-अजीब काम लिए जाते हैं। इसलिए पहले ज़रूरी है कि इंसान अपने फ़हम से काम ले और सोचे कि जो काम मैं करने जा रहा हूँ वह अल्लाह तआला के हुक्मों के तहत है या नहीं, और उसकी रज़ा के लिए है या नहीं। जब यह देख ले और फ़हम से काम ले ले, तो फिर हाथों से काम लेना ज़रूरी है। फिर अमली तौर पर अपने हाथों को हिलाना ज़रूरी है।

पहले सोचना, अक़्ल से काम लेना ज़रूरी है कि जो नेक काम मैं करने जा रहा हूँ उनसे नेक नतीजे निकलेंगे या नहीं। क्या यह अल्लाह तआला के हुक्म के मुताबिक़ हैं या नहीं। फिर उसके बाद उन पर अमल करे। सुस्ती और ग़फ़लत न करे।

हाँ, यह देख लेना भी ज़रूरी है कि तालीम सही है। कभी-कभी ऐसा होता है कि तालीम सही होती है लेकिन इंसान अपनी नादानी और जहालत की वजह से या किसी दूसरे की शरारत और ग़लतबयानी की वजह से धोखे में पड़ जाता है। यह भी हो जाता है कि कभी-कभी शैतान धोखा दे जाता है। उसी तालीम के हवाले से धोखा हो जाता है, इसलिए यह समझना ज़रूरी है।

इसलिए यह बहुत ज़रूरी है एक अहमदी के लिए कि वह अपने आमाल को अंजाम देने के लिए और अल्लाह तआला का क़ुर्ब हासिल करने के लिए कोशिश करे और सोचे और बिल्कुल साफ़ दिमाग़ से सोचे।

(उद्धृत : मल्फ़ूज़ात, जिल्द 4, पृष्ठ 438 से 440, संस्करण 1984)

पहले आत्मनिरीक्षण करे, फिर उस पर विचार करे, दुआ करे, फिर अमल करे और फिर लक्ष्य केवल यही हो कि मुझे अल्लाह तआला की रज़ा प्राप्त करनी है। अतः जब हम इन बातों को अपनाने वाले बनेंगे, तभी हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत के उद्देश्यों को पूरा करने वाले होंगे।

फिर एक स्थान पर आपने इबादतों के स्तर ऊँचे करने के लिए नसीहत करते हुए यह भी फ़रमाया कि अल्लाह तआला से मोहब्बत में पूर्ण भागीदारी लो और वास्तविक तौहीद उसी से स्थापित होगी। और इसके लिए जहाँ तुम यह इक़रार करते हो कि हमें अल्लाह तआला से मोहब्बत है, उसकी तौहीद क़ायम करना चाहते हैं, वहीं इसकी तस्दीक़ भी आवश्यक है। इसके लिए फिर अल्लाह तआला के समक्ष गिरना और गिड़गिड़ाना ज़रूरी है। जब ये बातें होंगी, तभी हम सच्ची तौहीद को अपनाने वाले, उस पर अमल करने वाले और उसे फैलाने वाले होंगे।

(मअख़ूज़: मलफ़ूज़ात, जिल्द 3, सफ़ा 187, एडिशन 1984)

फिर इस बात की वज़ाहत करते हुए कि अल्लाह तआला के साथ मोहब्बत से क्या मुराद है?

आपने फ़रमाया कि इससे मुराद यही है कि अपने मां-बाप, अपनी बीवी, अपनी औलाद, अपने नफ़्स हर चीज़ पर अल्लाह तआला की रज़ा को मुक़द्दम कर लिया जाए। चुनांचे क़ुरआन शरीफ़ में आता है :

فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ آبَاءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا (البقرہ: 201)

अर्थात अल्लाह तआला को वैसी ही याद करो जैसी तुम अपने बापों को याद करते हो, बल्कि उससे भी अधिक और सख़्त दर्जे की मोहब्बत से याद करो।

आपने फ़रमाया कि यहाँ यह बात भी ग़ौरतलब है कि अल्लाह तआला ने यह तालीम नहीं दी कि तुम उसे "बाप" कह कर पुकारो, बल्कि यह सिखाया है कि नसरानियों की तरह धोखा न लगे, इसलिए यह कहा गया है कि धोखा न लगे और अल्लाह को बाप कह कर न पुकारा जाए। यदि कोई कहे कि फिर बाप से कम दर्जे की मोहब्बत हुई, तो इस ऐतिराज़ को दूर करने के लिए "أَشَدَّ ذِكْرًا" रख दिया गया। अगर "أَشَدَّ ذِكْرًا" न होता तो ऐतिराज़ हो सकता था, मगर अब तो इसे हल कर दिया गया है कि अल्लाह फ़रमाता है कि बाप से भी ज़्यादा याद करो।

आप फ़रमाते हैं कि असल तौहीद को क़ायम करने के लिए ज़रूरी है कि अल्लाह तआला की मोहब्बत में पूर्ण भागीदारी लो और यह मोहब्बत साबित नहीं हो सकती जब तक आमली तौर पर पूर्ण न हो जाओ। केवल ज़बान से यह बात साबित नहीं होती। अगर कोई चीनी या मिस्री चीज़ का नाम ले, तो क्या उससे मुँह मीठा हो जाएगा? सिर्फ़ मीठे का नाम लेने से मुँह मीठा नहीं हो जाता। अगर कोई ज़बानी दोस्ती का इक़रार करे, लेकिन मुसीबत के समय मदद न करे, तो वह सच्चा दोस्त नहीं ठहरता। इसी तरह अगर कोई अल्लाह तआला की तौहीद का सिर्फ़ ज़बानी इक़रार करे और मोहब्बत का भी सिर्फ़ ज़बानी दावा हो, तो इससे कुछ लाभ नहीं। बल्कि यह ज़बानी इक़रार के बजाय आमली हिस्से को ज़्यादा चाहता है। इसका यह मतलब नहीं कि ज़बानी इक़रार कोई चीज़ नहीं, बल्कि मेरा मक्सद यह है कि ज़बानी इक़रार के साथ आमली तस्दीक़ भी ज़रूरी

है। इसलिए ज़रूरी है कि अल्लाह की राह में अपनी ज़िंदगी को वक़्फ़ करो और यही इस्लाम है। यही वह मक़सद है जिसके लिए मुझे भेजा गया है। अतः जो इस चश्मे के पास नहीं आता जो अल्लाह तआला ने इस मक़सद के लिए जारी किया है, वह यक़ीनन बे-नसीब रहेगा।

(मअख़ूज़: मलफ़ूज़ात, जिल्द 3, सफ़ा 188-189, एडिशन 1984)

आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला की तौहीद क़ायम करने के लिए अपनी ज़िंदगियों को ऐसा बनाओ। यह ज़रूरी नहीं कि कोई वक़्फ़ करके जमाअत की मुलाज़मत में आए। बल्कि मक़सद यह है कि अल्लाह के पैग़ाम को पहुँचाने के लिए, तालीम पर अमल करने के लिए अपनी ज़िंदगियों को वक़्फ़ करो, उन्हें इस तरह ढालो कि यह ज़ाहिर हो कि हमारी ज़िंदगी अल्लाह के लिए है। अपनी ज़िंदगियों को ऐसा बनाओगे तो तभी कामयाब होगे। फ़रमाया कि यही मक़सद समझो अपनी ज़िंदगियों का कि सिर्फ़ हमने दुनिया नहीं कमानी, बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आकर हमने अल्लाह तआला की तौहीद को दुनिया में क़ायम करने और फैलाने की हर संभव कोशिश करनी है। और जब यह सोच होगी, तो फिर जमाअत का हर फ़र्द अपना किरदार अदा कर रहा होगा अल्लाह की तौहीद का झंडा दुनिया में लहराने के लिए, उसे फैलाने के लिए और दुनिया को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के झंडे के नीचे लाने के लिए कोशिश कर रहा होगा।

अतः इस रमज़ान में जहाँ हमने यह अहद किए हैं कि हम इबादतों की तरफ़ ध्यान देंगे, अच्छे अख़लाक़ की तरफ़ ध्यान देंगे, नेकियाँ बजा लाने की तरफ़ ध्यान देंगे, अल्लाह तआला की तौहीद को फैलाने की तरफ़ ध्यान देंगे तो फिर इसके लिए हमें कोशिश भी करनी होगी और यह कोशिश सिर्फ़ रमज़ान के ख़त्म होने के साथ ही समाप्त नहीं होनी चाहिए, बल्कि पूरे साल जारी रहनी चाहिए।

जब यह पूरे साल जारी रहेगी, तभी हम उस मक़सद को हासिल करने वाले बन सकते हैं जो हमारी ज़िंदगी का मक़सद है। और अगर ऐसा नहीं, तो फिर अल्लाह तआला के हुक्म पर, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हुक्म पर अमल करते हुए जो हमने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की है, उसका कोई मक़सद नहीं होगा, और हम उस लाभ से वंचित रहेंगे जो उनकी बैअत में आने से हमें मिल सकता है। अतः हमें हमेशा इस बात का ख़याल रखना चाहिए कि हमने बैअत में आकर अपने अंदर एक विशेष तब्दीली पैदा करनी है और इस रमज़ान में जो दुआएँ की हैं, जो नेकियाँ हासिल की हैं, उन्हें पूरी उम्र का हिस्सा बनाने की कोशिश करनी है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं :

"अगर दुनियादारों की तरह रहोगे, तो इससे कुछ फ़ायदा नहीं कि तुमने मेरे हाथ पर तौबा की।

मेरे हाथ पर तौबा करना एक मौत चाहता है ताकि तुम नई ज़िंदगी में एक और पैदाइश हासिल करो।

बैअत अगर दिल से नहीं, तो उसका कोई नतीजा नहीं। मेरी बैअत से ख़ुदा दिल का इक़रार चाहता है।

अतः जो सच्चे दिल से मुझे क़बूल करता है और अपने गुनाहों से सच्ची तौबा करता है,

ग़फ़ूर-रहीम ख़ुदा उसके गुनाहों को ज़रूर बख़्श देता है और वह ऐसा हो जाता है जैसे माँ के पेट से निकला है।

तब फ़रिश्ते उसकी हिफ़ाज़त करते हैं।"

आपने मिसाल दी कि "अगर किसी गाँव में एक आदमी भी नेक हो, तो अल्लाह तआला उस नेक की ख़ातिर से उस गाँव को तबाही से महफ़ूज़ रखता है। लेकिन जब तबाही आती है, तो फिर सब पर आती है। फिर भी वह अपने बंदों को किसी न किसी रूप में बचा लेता है।

सुननतुल्लाह यही है कि अगर एक भी नेक हो, तो उसके लिए दूसरे भी बचा लिए जाते हैं।"

(मअख़ूज़: मलफ़ूज़ात, जिल्द 3, सफ़ा 262, एडिशन 1984)

अतः आजकल दुनिया की जो हालतें हैं, उनमें विशेष रूप से जहाँ हमें अपने आप को बचाने की, अपनी नस्लों को बचाने की कोशिश करनी है, दुनिया को बचाने की कोशिश करनी है, और तौहीद को दुनिया में क़ायम करने की कोशिश करनी है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के झंडे के नीचे लाने की कोशिश करनी है वहाँ इसके लिए हमें अपने अंदर एक विशेष तब्दीली स्थायी रूप से पैदा करनी होगी और दुआओं को अपनी ज़िंदगी का हिस्सा बनाना होगा, ताकि हम अपने आप को भी महफ़ूज़ रख सकें और दुनिया को भी।

क्योंकि दुनिया बहुत तेज़ी से तबाही की ओर जा रही है और अल्लाह तआला चाहे, तो इस्लाह के ऐसे साधन पैदा कर सकता है कि उनके दिलों को फेर दे और वह इस तबाही से बच सकें। और यदि तबाही आनी ही है, तो अल्लाह तआला फिर मोमिनों को, ईमान वालों को उससे बचाए। और उससे बचने के लिए ज़रूरी है कि हम अपने आमाल को उस दिशा में ढालें, उस तरह अदा करें कि अल्लाह तआला का फ़ज़्ल हम पर हमेशा बना रहे। अल्लाह करे कि हम इस बात का वास्तविक एहसास भी हासिल करने वाले बनें कि किस तरह हमने अपनी इबादतों को ज़िंदा रखना है, किस तरह अल्लाह तआला से संबंध पैदा करना है, किस तरह तक़्वा पर चलना है, किस तरह आला अख़लाक़ दिखाने हैं, किस तरह तौहीद को दुनिया में क़ायम करना है, और किस तरह दुनिया को तबाही से बचाना है, किस तरह अपने आप को दुनिया की तबाही और हमलों से बचाना है। और जब ये बातें होंगी और हमारे अंदर यह एहसास पैदा होगा, तो तभी हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करने वाले होंगे।

अल्लाह करे कि हम यह बैअत का हक़ अदा करने वाले बनें और यह रमज़ान हमारे लिए बरकतों का कारण बन जाए। वह हमें अपनी रहमतों, फ़ज़्लों और बरकात से नवाज़े और हमारा यह रमज़ान और आने वाला सारा साल और अगला रमज़ान तक हम अल्लाह तआला की इबादतों का हक़ अदा करने वाले बनें। और उसके बंदों का भी हक़ अदा करने वाले बनें। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार "अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-क़रीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्यात्मपूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर के अवसर पर हब्शा (इथोपिया) से लौटने वाले प्रवासियों के आगमन पर फ़रमाया: "मैं नहीं जानता कि इनमें से किस बात पर अधिक प्रसन्न हूँ ख़ैबर की विजय पर या जाफ़र के आने पर।"

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक हब्शी ग़ुलाम के शहीद होने के बारे में फ़रमाया: "अल्लाह ने तेरे चेहरे को ख़ूबसूरत बना दिया, तेरी बदबू को ख़ुशबू में बदल दिया और तेरे माल में वृद्धि कर दी।" आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसके लिए दुआ की और फ़रमाया कि "अल्लाह तआला ने उसे जन्नत में पहुँचा दिया है।"

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की धार्मिक सहिष्णुता और दूसरों के धार्मिक जज़्बात व एहसासात का सम्मान सर्वोच्च स्तर पर था। आपने यहूदियों की तौरात को सुरक्षित रूप में लौटाने का हुक्म दिया। आजकल की तरह यह नहीं हुआ कि मुसलमानों से दुश्मनी में क़ुरआन शरीफ़ को जला दिया जाए। बल्कि आपने यह मिसाल पेश की कि "उनके जो धर्मग्रंथ हैं, उन्हें सुरक्षित रखो और उन्हें लौटा दो।"

ग़ज़वा-ए-ख़ैबर और ग़ज़वा-ए-वादियुल-क़ुरा के सन्दर्भ में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुबारक सीरत का वर्णन।

मौलाना मुहम्मद करीमुद्दीन शाहिद साहब सदर, सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान, श्रीमान अब्दुर्रशीद याह्या साहब पूर्व सदर, क़ज़ा बोर्ड कनाडा, श्रीमान मिर्ज़ा इम्तियाज़ अहमद साहब अमीर, ज़िला हैदराबाद (सिंध), श्रीमान अल-हाज मुहम्मद बिलअरबी साहब अल्जीरिया, तथा श्रीमान मुहम्मद अशरफ़ साहब कोटरी, ज़िला हैदराबाद की मृत्यु पर उनका नेक ज़िक्र और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 04 अप्रैल 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

रमज़ान से पहले ग़ज़वों के सिलसिले में पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत के विभिन्न पहलुओं का उल्लेख हो रहा था और इसी सिलसिले में ख़ैबर की जंग के वाक़िआत का ज़िक्र किया जा रहा था। आज भी मैं उसी संदर्भ में कुछ बातें पेश करूंगा। ख़ैबर की फ़तह की ख़ुशी के साथ ही इन्ही दिनों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए एक और ख़ुशी की बात पेश आई। जिस पर आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाया कि मैं यह नहीं कह सकता कि मुझे ख़ैबर की फ़तह की ज़्यादा ख़ुशी है या इस बात की। और वह थी हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु की, हबशा के मुहाजिरीन के साथ, हबशा से वापसी।

जैसा कि हम जानते हैं कि मक्का वालों के ज़ुल्म और सितम से तंग आकर वहाँ के कुछ मुसलमान हबशा की तरफ हिजरत कर गए थे जिनमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चचाज़ाद भाई हज़रत जा'फ़र बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हुभी शामिल थे। सुल्ह-ए-हुदैबिया के बाद पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत 'अम्र बिन उमय्या ज़मरी रज़ियल्लाहु अन्हु को नजाशी की तरफ़ एक ख़त देकर हबशा रवाना किया जिसमें लिखा था कि अब जितने भी मुहाजिर मुसलमान वहाँ रह गए हैं उन्हें मदीना मेरे पास भेज दिया जाए। लिहाज़ा विदेश में चौदह-पंद्रह साल गुज़ारने के बाद ये लोग दो कश्तियों में सवार होकर मदीना पहुँचे और जब उन्हें मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ैबर की तरफ़ रवाना हो चुके हैं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मिलने की बेकरारी में मदीना में रुकने की बजाय ख़ैबर की तरफ़ रवाना हो गए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा तो उठकर गले लगाया, दोनों आँखों के बीच उनकी पेशानी को चूमा और फ़रमाया:

"مَا أَدْرِي بِأَيِّهِمَا أَنَا أُسَرُّ: بِفَتْحِ خَيْبَرَ، أَمْ بِقُدُومِ جَعْفَرٍ"

"मैं नहीं जानता कि इन दोनों बातों में से मुझे किस बात की ज़्यादा ख़ुशी है ख़ैबर की फ़तह पर या जा'फ़र के आने पर।"

इनके साथ हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हुभी अपनी क़ौम के पचास से ज़्यादा लोगों के साथ पहुँचे थे। हज़रत अबू मूसा अशअरी का असली नाम अब्दुल्लाह बिन क़ैस था और ये अशअरी क़बीले से ताल्लुक रखते थे। ये अपनी क़ौम के कुछ लोगों के साथ मक्का आए और इस्लाम क़बूल करने के बाद वापस अपनी क़ौम के पास चले गए और फिर कुछ अरसे बाद अपने दो भाइयों और क़ौम के लगभग पचास लोगों के साथ मदीना की तरफ़ हिजरत के इरादे से समुंदरी सफ़र पर रवाना हुए। लेकिन सफ़र के दौरान तूफ़ानी हवाओं के चलते उनकी कश्ती हबशा के किनारे लग गई और वहाँ इनकी मुलाक़ात हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु से हुई और ये वहीं ठहर गए। जब हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु मदीना की तरफ़ आने के लिए तैयार हुए तो अशअरी क़बीले के ये मुसलमान भी उनके साथ थे।

इन्हीं दिनों क़बीला दौस से भी कुछ अफ़राद आ गए, जिनमें हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु और तुफ़ैल बिन अम्र और उनके साथी शामिल थे। क़बीला अशजअ के भी कुछ लोग आ गए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इन तमाम आने वालों को भी माले-ग़नीमत (ख़ैबर के माल) में से कुछ न कुछ अता फ़रमाया।

(सीरत एन्साइक्लोपीडिया, जिल्द 8, पृष्ठ 402 से 404, दारुस्सलाम)
(असदुल-ग़ाबा, जिल्द 3, पृष्ठ 364, जिल्द 6, पृष्ठ 299, दारुल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत)، सहीह बुख़ारी, किताब अल-मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वत ख़ैबर, हदीस 4230)
(फ़त्ह-ए-ख़ैबर, बाशमील, पृष्ठ 200, नफ़ीस अकैडमी)
(अत-तबक़ात अल-कुबरा, जिल्द 1, पृष्ठ 265, दारुल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत)

कश्ती वालों की फ़ज़ीलत के सिलसिले में और तफ़्सील इस तरह बयान हुई है। हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके साथ दूसरे मुसलमान कश्ती के ज़रिए सफ़र करके पहुँचे थे इसलिए उन्हें "अस्हाब उस-सफ़ीना" यानी "कश्ती वाले" कहा जाता था। जब ये मदीना पहुँचे तो तक़रीबन पंद्रह साल का अर्सा गुज़र चुका था और यहाँ के मुहाजिर मुसलमान कई जंगों में शरीक हो चुके थे और हिजरत में भी उनसे पहले थे। इसलिए ऐसा मालूम होता है कि आपस में यह चर्चा भी होने लगी कि हम उन्हें ज़्यादा फ़ज़ीलत वाले हैं यानी जो हबशा की तरफ़ हिजरत करने वाले थे उनसे मदीना में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ रहने वाले ज़्यादा अफ़ज़ल हैं।

एक बार हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हुकी बीवी हज़रत अस्मा बिंत उमैस, उम्मुल-मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा से मिलने गईं। वहाँ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी पहुंचे और पूछा कि यह कौन हैं? हज़रत हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बताया कि यह अस्मा बिंत उमैस हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बोले: "अच्छा, वह हबशा वाली... समुंदरी सफ़र करने वाली!" हज़रत अस्मा ने कहा: "जी

हाँ।" इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बोले: "हमने तुमसे पहले मदीना की तरफ़ हिजरत की है, इसलिए हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के तुमसे ज़्यादा क़रीब हैं।" यह सुनकर हज़रत अस्मा को रंज और ग़ुस्सा आया। उन्होंने कहा: "अल्लाह की क़सम! ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता। तुम लोग तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ रहते थे वह तुम्हारे भूखे को खाना खिलाते, तुम्हारे कम-इल्म को नसीहत देते। जबकि हम अपने वतन से दूर, परदेस में, एक दुश्मन देश में थे। हमें वहाँ तरह-तरह के डर और खौफ़ होते थे। हमने यह सब कुछ अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़ातिर सहन किया।"

फिर वह बोलीं: "अल्लाह की क़सम! जब तक मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इस बारे में पूछ न लूँ, तब तक खाना नहीं खाऊँगी। और मैं सिर्फ़ उतनी ही बात करूँगी जितनी तुमने कही है न कम, न ज़्यादा। मैं पूरी बात जाकर बयान करूंगी।" फिर वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुईं और सारा मामला बयान किया।

इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया...

لَيْسَ بِأَحَقَّ بِي مِنْكُمْ، وَلَهُ وَلِأَصْحَابِهِ هِجْرَةٌ وَاحِدَةٌ
وَلَكُمْ أَنْتُمْ أَهْلَ السَّفِينَةِ هِجْرَتَانِ

रमज़ान से पहले गज़वात के सिलसिले में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की सीरत के पहलुओं का बयान हो रहा था और इसी क्रम में ख़ैबर की जंग के वाक़ियात का ज़िक्र चल रहा था। आज भी मैं उसी सिलसिले में कुछ बयान करूँगा। ख़ैबर की फ़तह की खुशी के साथ ही उन्हीं दिनों रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को एक और बड़ी खुशी की बात पेश आई। इस पर आपने फ़रमाया कि मैं नहीं कह सकता कि मुझे ख़ैबर की फ़तह की ज़्यादा खुशी हुई या इस बात की। और वह बात थी हज़रत जाफ़र (रज़ि.) की हबशा से, हिजरत करने वाले दूसरे मुसलमानों के साथ, वापसी।

जैसा कि हम जानते हैं कि मक्का वालों के ज़ुल्म और सख़्ती से तंग आकर वहाँ के कुछ मुसलमान हबशा की तरफ़ हिजरत कर गए थे, जिनमें रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के चचेरे भाई हज़रत जाफ़र बिन अबू तालिब (रज़ि.) भी शामिल थे। सुलह-ए-हुदैबिया के बाद नबी-ए-अकरम (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने हज़रत 'अम्र बिन उमैय्यह ज़मरी (रज़ि.) को एक ख़त देकर नजाशी के पास हबशा रवाना किया जिसमें यह लिखा था कि अब जितने मुसलमान वहाँ रह गए हैं, उन्हें मदीना भेज दिया जाए। चूँकि इन लोगों ने परदेश में चौदह-पंद्रह साल बिता दिए थे, अब ये दो कश्तियों में सवार होकर मदीना पहुँचे। जब उन्हें पता चला कि आप (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ख़ैबर की तरफ़ तशरीफ़ ले गए हैं, तो फिर आपसे मिलने की बेताबी में मदीना में रुकने की बजाय ख़ैबर की ओर चल दिए।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने जब हज़रत जाफ़र (रज़ि.) को देखा तो उठ खड़े हुए और उन्हें गले लगाया। उनकी दोनों आँखों के बीच उनकी पेशानी पर बोसा दिया और फ़रमाया:

مَا أَدْرِي بِأَيِّهِمَا أَنَا أُسَرُّ: بِفَتْحِ خَيْبَرَ، أَمْ بِقُدُومِ جَعْفَرٍ

"मुझे नहीं मालूम कि मैं इन दोनों बातों में से किस बात पर ज़्यादा खुश हूँ ख़ैबर की फ़तह पर या जाफ़र के आने पर।"

इनके साथ हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि.) भी अपनी क़ौम के पचास से ज़्यादा लोगों के साथ पहुँचे थे। हज़रत अबू मूसा अशअरी का असली नाम अब्दुल्लाह बिन क़ैस था और ये अशअरी क़बीले से ताल्लुक़ रखते थे। ये अपनी क़ौम के कुछ लोगों के साथ मक्का आए और इस्लाम कबूल कर लिया, फिर वापिस अपनी क़ौम की तरफ़ लौट गए। कुछ समय बाद अपने दो भाइयों और क़रीब पचास लोगों के साथ मदीना की हिजरत के लिए समुंदरी सफ़र पर निकले, लेकिन सफ़र के दौरान तूफ़ान के कारण इनकी कश्ती हबशा के साहिल पर जा लगी और वहीं इनकी मुलाकात हज़रत जाफ़र (रज़ि.) से हुई और ये भी वहीं रहने लगे। जब हज़रत जाफ़र (रज़ि.) मदीना लौटने लगे तो ये लोग भी उनके साथ थे।

इसी दौरान क़बीला दोस से भी कुछ लोग आ पहुँचे जिनमें हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि.), तुफ़ैल बिन 'अम्र और उनके साथी शामिल थे। क़बीला अशजअ के भी कुछ लोग पहुँच गए। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने इन सभी आने वालों को भी माल-ए-ग़नीमत में से कुछ न कुछ अता फ़रमाया।

(सीरत इनसाइक्लोपीडिया, जिल्द 8, सफ़ा 402-404, दारुस्सलाम), (असदुल ग़ाबा, जिल्द 3, सफ़ा 364; जिल्द 6, सफ़ा 299, दारुल कुतुब अल--इल्मिय्यह, बेरूत), (सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वत ख़ैबर, हदीस 4230), (फ़त्हे ख़ैबर, बाशमील, सफ़ा 200, नफ़ीस अकैडमी)(अत्तबक़ातुल कुबरा, जिल्द 1, सफ़ा 265, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्यह, बेरूत)

कश्ती वालों की फ़ज़ीलत के बारे में तफ़सील इस तरह आई है। हज़रत जाफ़र (रज़ि.) और उनके साथी मुसलमान कश्ती के जरिए आए थे, इसलिए उन्हें "अस्हाबु-स्सफ़ीना" यानी कश्ती वाले कहा गया। जब ये मदीना पहुँचे तो पंद्रह साल का अर्सा गुज़र चुका था और यहाँ के हिजरत करने वाले मुसलमान कई जंगों में शामिल हो चुके थे और हिजरत में भी आगे रह चुके थे। इसलिए ऐसा मालूम होता है कि आपस में यह ज़िक्र चलने लगा कि हम उन लोगों से ज़्यादा अफ़ज़ल हैं, यानी जो हबशा की तरफ़ हिजरत कर गए थे। एक बार हज़रत जाफ़र (रज़ि.) की अहलिया हज़रत अस्मा बिन्त उमैस, उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) के पास आईं। वहाँ हज़रत उमर (रज़ि.) भी मौजूद थे। उन्होंने पूछा कि यह कौन हैं? हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) ने बताया कि यह अस्मा बिन्त उमैस हैं। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, अच्छा, यह वह हैं जो हबशा से आई हैं, समुंदरी सफ़र करने वालीं। हज़रत अस्मा ने कहा, जी हाँ। इस पर हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा, हमने मदीना की तरफ़ तुमसे पहले हिजरत की है, इसलिए हम रसू-लुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के तुमसे ज़्यादा क़रीब हैं।

यह सुनकर हज़रत अस्मा को रंज हुआ और उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम! ऐसा नहीं हो सकता। तुम लोग तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के साथ रहते थे, वो तुम्हारे भूखे को खाना देते और तुम्हें दीन की तालीम देते, लेकिन हम लोग अपने वतन से दूर एक परदेसी मुल्क में थे, जहाँ डर और ख़ौफ़ की हालत में अल्लाह और उसके रसूल की ख़ातिर तमाम तकलीफ़ें बर्दाश्त करते रहे। उन्होंने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं तब तक खाना नहीं खाऊँगी जब तक मैं रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से जाकर यह पूरा वाक़िआ बयान न करूँ। मैं उतनी ही बात करूँगी जितनी हज़रत उमर ने की, न कम न ज़्यादा।

फिर वह रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) की ख़िदमत में पहुँचीं और यह तमाम बात बयान की। इस पर आपने फ़रमाया:

"वो तुमसे ज़्यादा हक़दार नहीं हैं, बल्कि उनकी और उनके साथियों की एक हिजरत है और तुम्हारी, यानी कश्ती के ज़रिए हबशा जाने वालों की दो हिजरतें हैं।"

इस तरह आपने उनकी दिलजोई की और उनका जो ग़म था, वह दूर किया। जब हज़रत अस्मा ने यह सुना तो फ़ख़्र और सआदत का यह शरफ़ उन्होंने अपने साथियों को बताया। वह बयान करती हैं कि फिर हबशा वाले लोग ग्रुप-दर-ग्रुप मेरे पास आते और बहुत ही शौक़ से रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) का यह इरशाद सुनते। दुनिया में उन्हें इससे ज़्यादा कोई और बात ख़ुशी न देती थी और न ही उनके लिए कोई चीज़ इतनी अफ़ज़ल थी जितना यह इरशाद। वे कहती हैं कि कुछ लोग तो बार-बार इस इरशाद को सुनने के लिए मेरे पास आते।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वत ख़ैबर, हदीस 4230, 4231)

यहाँ एक हबशी ग़ुलाम का भी ज़िक्र मिलता है जो मुसलमान हुआ और शहीद हुआ।

रिवायत में आता है कि ख़ैबर के एक शख़्स का ग़ुलाम यसार नामी था जो उसका रेवड़ चराया करता था। जब उसने देखा कि ख़ैबर के लोग रसूलुल्लाह (सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम) के मुक़ाबले के लिए हथियार उठा रहे हैं, तो उसने पूछा कि तुम क्या करना चाहते हो? उन्होंने कहा कि हम उस आदमी से जंग करेंगे जो अपने आपको नबी कहता है। यह बात उसके दिल में उतर गई। वह अपनी बकरियाँ लेकर निकला ताकि उन्हें चरा सके। मुसलमानों ने उसे पकड़ लिया और रसूलुल्लाह (सल्ल-ल्लाहो अलैहि व सल्लम) के पास ले आए।

दूसरी रिवायत के मुताबिक़ वह ख़ुद ही बकरियाँ लेकर रसूलुल्लाह (सल्लल्ला-हो अलैहि व सल्लम) के पास आया। आपने उससे बात की। उसने पूछा, आप किस बात की तरफ़ बुलाते हैं? आपने फ़रमाया, मैं तुम्हें इस्लाम की तरफ़ बुलाता हूँ और यह कि तुम गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं उसका रसूल हूँ। और यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत न करो। उस ग़ुलाम ने पूछा कि अगर मैं यह मान लूँ तो मुझे क्या मिलेगा? आपने फ़रमाया, तुम्हारे लिए जन्नत है। फिर उसने कहा, या रसूलुल्लाह! मैं ऐसा आदमी हूँ जिसका रंग काला है, चेहरा अच्छा नहीं, बदबू वाला हूँ, और मेरे पास कोई माल भी नहीं। अगर मैं इनसे लड़ाई करूँ और मारा जाऊँ तो क्या मुझे जन्नत मिलेगी? आपने फ़रमाया, हाँ, तुम्हें जन्नत मिलेगी।

उसने कहा, या रसूलुल्लाह! ये बकरियाँ मेरे पास अमानत हैं, इनका क्या करूँ? आपने फ़रमाया, इन्हें लश्कर से निकालकर खुले मैदान में छोड़ दो, अल्लाह तुम्हारी तरफ़ से तुम्हारी अमानत अदा कर देगा।

जो लोग यह ऐतराज़ करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने माल-ए-ग़नीमत के लिए जंगें कीं, ख़ासकर ख़ैबर के सिलसिले में कि यहूद के माल पर नाजायज़ क़ब्ज़ा करने के लिए ज़ुल्म किए गए, तो यह बात ग़लत साबित होती है।

जंग के दौरान जबकि सहाबा भूख से बेहाल थे, दुश्मन की बकरियों का एक रेवड़ मिल गया, मगर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने उन्हें इस्तेमाल करने के बजाय अमानत का हक़ अदा करते हुए उन्हें वापिस करने का हुक्म दिया।

ख़ैर, उसने ऐसा ही किया। बकरियाँ ख़ुद-ब-ख़ुद चल पड़ीं, जैसे कोई उन्हें हाँक रहा हो, यहाँ तक कि हर बकरी अपने मालिक तक पहुँच गई। फिर वह आगे बढ़ा और लड़ाई में शामिल हो गया। एक तीर उसको लगा और वह शहीद हो गया, जबकि उसने अभी एक सजदा भी नहीं किया था। मुसलमानों ने उसे उठाकर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के ख़ैमे में पहुँचा दिया। हज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) उसके पास तशरीफ़ लाए और वह शहीद हो चुका था।

आपने फ़रमाया, "अल्लाह ने तेरे चेहरे को ख़ूबसूरत बना दिया, तेरी बदबू को ख़ुशबू में बदल दिया, और तेरे माल को बढ़ा दिया।" फिर उसके लिए दुआ की और फ़रमाया, "अल्लाह ने इसे जन्नत में पहुँचा दिया है।"

(सुबुलुल हुदा व अर-रशाद, जिल्द 5, सफ़ा 129, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्यह, बेरूत)

(तबक़ातुल कुबरा, जिल्द 2, सफ़ा 82, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्यह, बेरूत)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी यह वाकया बयान किया है कि "खैबर के घेराव के दिनों में एक यहूदी प्रमुख का चरवाहा जो उसकी बकरियाँ चराया करता था, मुसलमान हो गया। मुसलमान होने के बाद उसने कहा, 'या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! अब मैं तो उन लोगों में नहीं जा सकता और ये बकरियाँ उस यहूदी की मेरी पास अमानत हैं। अब मैं इनका क्या करूँ?' आपने फ़रमाया: बकरियों का मुँह क़िले की तरफ़ कर दो और उन्हें हाँक दो। ख़ुदा तआला उन्हें उनके मालिक के पास पहुँचा देगा।" चुनांचे उसने वैसा ही किया और बकरियाँ क़िले के पास चली गईं जहाँ से क़िले वालों ने उन्हें अंदर ले लिया।

(दीबाचा तफ़्सीर-उल-क़ुरआन, अनवारुल उलूम, जिल्द 20, पृष्ठ 327)

खैबर के अवसर पर कुछ फिक्ही मसलों का भी उल्लेख मिलता है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने खैबर के दिन घरेलू गधों के गोश्त से मना फ़रमा दिया।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वत-ए-खैबर, हदीस 4218)

इसी तरह बुख़ारी की एक रिवायत में है कि हज़रत अलीؓ ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने खैबर के दिन घरेलू गधे के गोश्त और मुत'अ से मना फ़रमा दिया।

(सहीह बुख़ारी, किताबुज़-ज़बाइह वस सईद, बाब लहूमुल-हुमुरुल-अनसिय्या, हदीस 5523)

अहले फदक की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सुलह का भी ज़िक्र है। फदक, मदीना से छह रात की दूरी पर खैबर के क़रीब वाक़े है।

(फ़रहंग-ए-सिरत, पृष्ठ 225, ज़वार अकैडमी, कराची)

जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम खैबर की तरफ़ मुतवज्जे हुए और उसके क़रीब पहुँचे, तो आपने मुहैयिसा बिन मसरूद को फदक की तरफ़ रवाना फ़रमाया ताकि वह उन्हें इस्लाम की तरफ़ दावत दें और उन्हें डराएँ कि तुम पर भी हमला हो सकता है, क्योंकि वे भी शरारतें करने में आगे थे या किसी न किसी तरह मुसलमानों को तंग करते थे या कोई ऐसी बात करते थे जिससे किसी रंग में नुक़सान पहुँचता था। तो आपने फ़रमाया कि तुम पर भी हमला हो सकता है जैसे हम खैबर पर कर रहे हैं।

हज़रत मुहैयिसा बयान करते हैं कि मैं उनके पास गया और दो दिन वहाँ ठहरा, लेकिन वे टालमटोल करते रहे और कहने लगे कि खैबर में दस हज़ार जंगी लोग हैं और उनमें आमिर, यासिर, हारिस और यहूदियों के सरदार मरहब जैसे लोग शामिल हैं। हमें नहीं लगता कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम वहाँ तक पहुँच पाएँगे।

हज़रत मुहैयिसा बयान करते हैं कि जब मैंने उनकी शरारत और हटधर्मी देखी, तो वापस लौटने का इरादा किया। कहते हैं कि फिर उस क़बीले के लोगों ने कहा कि हम आपके साथ अपने कुछ लोग भेजते हैं जो हमारी तरफ़ से सुलह का पैग़ाम लेकर जाएँगे। और वे यह गुमान कर रहे थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम खैबर को फतह नहीं कर सकेंगे। उन्होंने कह तो दिया कि ठीक है हम आदमी भेजते हैं लेकिन उनके दिल में यही बात थी कि खैबर तो फतह नहीं होना।

इसलिए वे इसी तरह करते रहे, टालमटोल करते रहे, ये बातें करते रहे कि अच्छा भेजते हैं आदमी, यहाँ तक कि उनके पास कुछ लोग आए और उन्हें खबर दी कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने क़िला नाअिम को फतह कर लिया है। तो इस पर फदक वाले डर गए और उन्होंने अपने सरदारों में से एक शख़्स को एक जमाअत के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में भेजा जिसका नाम नून बिन यूशअ था।

उसने हाज़िर होकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि हम से इस बात पर सुलह कर ली जाए कि हमारी जान बख़्श दी जाए और हम अपना माल व असबाब लेकर फदक से चले जाएँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनकी दरख्वास्त क़बूल कर ली।

एक रिवायत यह भी है कि फदक वालों ने इस बात पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सुलह की थी कि आधी ज़मीनें उनके लिए छोड़ दी जाएँ और बाकी आधी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास रहें। चूँकि यह बस्ती बग़ैर जंग के हासिल हुई थी, लिहाज़ा यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हक़ में फ़ै का माल था। चुनांचे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फदक की आमदनी से खर्च किया करते थे।

(सबलुल हुदा, जिल्द 5, पृष्ठ 138, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत) (सीरतुल हलबीया, जिल्द 3, पृष्ठ 74, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरूत)

हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ ख़ैबर की ओर कूच किया, लेकिन हमें ग़नीमत में सोना या चाँदी नहीं मिला। केवल ऊँट, मवेशी, सामान और बाग़ात हासिल हुए। एक रिवायत में है कि ग़नीमत में कपड़े और घरेलू वस्तुएँ थीं।

कुछ क़िलों से जो हथियार प्राप्त हुए, उनकी तफ़सील यह है: एक हज़ार भाले, चार सौ तलवारें और पाँच सौ धनुष मिले। बुशैर बिन यसार से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर को कुल मिलाकर छत्तीस हिस्सों में तक़सीम फ़रमाया। आपने इनमें से आधे, यानी अठारह हिस्से मुसलमानों के लिए मख़सूस किए, जिनमें से हर एक हिस्सा सौ हिस्सों पर मुश्तमिल था यानी कुल एक हज़ार आठ सौ हिस्से बनाए गए। नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का हिस्सा भी उनमें से किसी एक की तरह था, यानी जितना हिस्सा दूसरों को मिला, उतना ही आपको भी मिला। एक रिवायत में है कि सवार के लिए तीन हिस्से थे और पैदल चलने वाले के लिए एक हिस्सा।

बाक़ी आधे हिस्सों को आपने भविष्य के हालात, वाक़िआत और मुसलमानों को पेश आने वाले मामलों के लिए महफ़ूज़ कर दिया यह एक तरह का रिज़र्व फ़ंड था। ये वतयिह, कतीबा, सुलालिम और उनसे मुताल्लिक जायदादें थीं।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वत ख़ैबर, हदीस 4228)

(सुनन अबू दाऊद, बाब मा जाअ फ़ी अर्ज़ ख़ैबर, हदीस 3012, 3014)

(सबलुल हुदा वल रशाद, जिल्द 5, सफ़ा 141, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)

(फ़त्ह ख़ैबर, बाशमील, सफ़ा 188, नफ़ीस अकैडमी, कराची)

एक रिवायत में है कि कतीबा से अल्लाह का ख़ुमुस (पाँचवाँ हिस्सा), नबी का हिस्सा, रिश्तेदारों, यतीमों और मिस्कीनों का हिस्सा, और नबी की अज़वाजे मुताहरात के ख़र्च के लिए रखा गया। और उन लोगों को भी हिस्सा दिया गया जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और अहल-ए-फ़दक के दरमियान सफ़ारत (राजनीतिक मध्यस्थता) का काम करते थे। उनमें से एक हज़रत मुहैय्सा बिन मसऊद थे। उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तीस वसक जौ और तीस वसक खजूर अता की। एक वसक में साठ साअ होते हैं और एक साअ कम-अज़-कम ढाई किलो का होता है। इस तरह तक़रीबन चार हज़ार पाँच सौ किलो जौ और चार हज़ार पाँच सौ किलो खजूर उन्हें दी गईं।

ख़ैबर की ग़नीमतें आम तौर पर सिर्फ उन्हीं लोगों में तक़सीम की गईं जो सुल्ह हुदैबिया में शामिल थे। अलबत्ता, कुछ लोगों को इस ज़ाब्ते से अलग करते हुए भी दिया गया — जैसे हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हु को, और इसी तरह हबशा से लौटने वाले और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु वग़ैरह को भी ग़नीमत में से दिया गया। एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए जो ख़ुमुस था, उससे हथियार और कपड़े ख़रीदे जाते थे, और उससे अहले बैत, बनू मुत्तलिब, उनकी यतीम औरतों और साइलों को दिया जाता था।

इब्न इशाक़ ने लिखा है कि ख़ैबर की तक़सीम के ज़िम्मेदार जब्बार बिन सख़र अंसारी (जो बनू सलमा से थे) और ज़ैद बिन साबित (जो बनू नज्जार से थे) थे यही दोनों लोग हिसाब किताब करके तक़सीम करते थे। इब्न सअद ने लिखा है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ग़नीमत इकट्ठी करने का हुक्म दिया तो माल जमा कर लिया गया। उस पर फ़रवा बिन बय्याज़ी को निगरान मुक़र्रर फ़रमाया गया और गिनती की ज़िम्मेदारी हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु को दी गई।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि मुझे एक थैली मिली। एक दूसरी रिवायत में है कि वह थैली चरबी से भरी हुई थी। मैंने कहा कि

मैं इसमें से किसी को कुछ नहीं दूँगा। जब मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सामने से गुज़रा तो शर्म महसूस हुई। मैंने वह थैली बग़ल में ले ली और अपने साथियों के पास पहुँचा और उसे छिपा लिया। रास्ते में ग़नीमत का निगरान मिला। उसने थैली का किनारा पकड़ लिया और कहा: इधर लाओ, हम इसे तक़सीम करेंगे। मैंने कहा: हरगिज़ नहीं, अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हें ये नहीं दूँगा। उसने थैली खींचनी शुरू कर दी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने देखा और मुस्कुरा दिए। आपने निगरान से फ़रमाया: इसे छोड़ दो। उन्होंने मुझे छोड़ दिया और मैं अपना सामान लेकर अपने साथियों के पास गया। फिर हमने मिलकर उसे खा लिया। यह था आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अपने सहाबा के साथ शफ़क़त का बर्ताव कि ठीक है, उसने ले लिया, तो जाने दो, उसे ले जाने दो।

इब्न इशाक़ ने बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इब्न लुक़ैम को पालतू मुर्गियाँ और पालतू जानवर अता किए यानी जो कुछ भी था, हर चीज़ तक़सीम की जाती थी।

ख़ैबर में शरीक होने वाली औरतों को भी दिया गया। इब्न इशाक़ ने लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ कुछ मुसलमान औरतें ख़ैबर में मौजूद थीं। आपने उन्हें माल-ए-फ़ै में से कुछ अता फ़रमाया, अलबत्ता ग़नीमत में बाक़ायदा हिस्सा नहीं निकाला गया। बनू ग़िफ़ार क़बीले की एक औरत कहती हैं कि मैं बनू ग़िफ़ार की कुछ औरतों के साथ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास पहुँची और हमने अर्ज़ किया: ऐ अल्लाह के रसूल! हम आपके साथ चलना चाहती हैं उस वक़्त आप ख़ैबर की ओर जा रहे थे। औरतों ने कहा: हम ज़ख़्मी लोगों का इलाज करेंगी और मुसलमानों की मदद करेंगी। आपने फ़रमाया: अल्लाह की बरकत के साथ चलो। हम आपके साथ निकल पड़े। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर को फ़त्ह किया तो आपने हमें भी माल में से दिया। आपने एक हार उठाया और मेरी गर्दन में पहनाया। वह रिवायत करने वाली कहती हैं: ख़ुदा की क़सम! वह हार हमेशा मेरी गर्दन में रहा एक लम्हे के लिए भी मैं उसे अपने से जुदा नहीं करती थी। यहाँ तक कि मैंने वसीयत की थी कि मुझे उस हार के साथ ही दफ़न किया जाए और वह गांठ जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने लगाई थी, कोई हाथ उसे न खोले। इस बनू ग़िफ़ार क़बीले की औरत का नाम उम्मैयह बिन्त क़ैस अबू सालित बयान किया गया है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उनैस से रिवायत है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ ख़ैबर की तरफ़ निकला और मेरी बीवी भी साथ थी, जो हामिला थी। रास्ते में ही बच्चा पैदा हो गया। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को खबर दी। आपने फ़रमाया: उसके लिए खजूरें भिगो दो और जब वे अच्छे से तर हो जाएँ, तो उसे पिलाओ यानी पानी में भिगो कर जो रस निकले, वही उसे पिलाओ। मैंने ऐसा ही किया, और उसे कोई तकलीफ़ नहीं हुई। जन्म के बाद की कमजोरी दूर हो गई। जब हमने ख़ैबर को फ़त्ह किया, तो उनके लिए हिस्सा नहीं निकाला गया, मगर आपने औरतों को भी माल-ए-फ़ै से फदक की माल से दिया। मेरी बीवी को भी दिया गया और उस बच्चे को भी, जो रास्ते में पैदा हुआ था।

(सबलुल हुदा वल रशाद, जिल्द 5, सफ़ा 141–144, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत),(तबक़ातुल कुबरा, जिल्द 1, सफ़ा 265; जिल्द 8, सफ़ा 227–228, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत),(लुग़ातुल हदीस, जिल्द 2, सफ़ा 648; जिल्द 4, सफ़ा 487, मुदर्रिजा नुमानी किताब ख़ाना)

यहाँ यहूदियों की तोरत के ग्रंथ लौटाने का भी ज़िक्र मिलता है। जब ख़ैबर के क़िलों से माल-ए-ग़नीमत इकट्ठा किया गया तो उसमें तोरत के कुछ ग्रंथ भी मिले। यहूदियों ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में हाज़िर होकर उनकी वापसी की मांग की, तो आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हिफ़ाज़त से उनके ग्रंथ लौटाने का हुक्म दिया।

(सीरत-ए-हलबिया, जिल्द 3, सफ़ा 62, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत)

जो तोरत लिखी हुई थी, उसे लौटा दिया गया। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मज़हबी सहिष्णुता और धार्मिक भावनाओं की क़द्रदानी का यह उच्चतम नमूना था कि आपने उनकी तोरत को सुरक्षित लौटाने का आदेश दिया। ऐसा नहीं किया जैसा आजकल होता है कि धार्मिक ग्रंथों को जला दिया जाता है। मुसलमानों से दुश्मनी में क़ुरआन शरीफ़ को जलाया जाता है। आपने तो यह नमूना पेश किया कि उनके जो ग्रंथ हैं, उन्हें महफूज़ रखो और लौटा दो।

ख़ैबर से वापसी के दौरान ग़ज़वा वादी-उल-क़ुरा का भी उल्लेख मिलता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़त्ह-ए-ख़ैबर के बाद कुछ दिन वहाँ क़ियाम फ़रमाया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस्लामी लश्कर के साथ वापसी के लिए रवाना हुए तो वादी-उल-क़ुरा में यहूदियों से मुक़ाबला हुआ। यह वादी तैमाए और ख़ैबर के बीच स्थित है, जिसमें बहुत-सी बस्तियाँ आबाद थीं। इसे वादी-उल-क़ुरा कहा जाता है। पुराने ज़माने में यहां क़ौमे 'आद' और 'समूद' बसी हुई थीं। ये दो क़ौमें हैं जिनका ज़िक्र क़ुरआन शरीफ़ में भी मिलता है। इस्लाम से पहले यहूदी इन बस्तियों में आकर आबाद हो गए और उन्होंने खेती और पानी की व्यवस्था को बहुत तरक्की दी, और यहूदी समुदाय का यह एक केंद्र बन गया।

(सीरतुन्नबी, शिब्ली, जिल्द 1, सफ़ा 288, मक्तबा रहमानीया)

इस मौक़े पर हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की एक रिवायत है। वे बयान करते हैं कि हमने ख़ैबर फतह किया। फिर हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ वादी-उल-क़ुरा में आए और आपके साथ आपका एक ग़ुलाम था जिसे "मिदअम" कहा जाता था। उसे बनू ज़िबाब में से किसी ने बतौर तोहफ़ा दिया था। जब वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कजावा उतार रहा था, तो अचानक एक अज्ञात व्यक्ति का तीर आया और उसे लग गया, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। लोगों ने कहा कि उसे शहादत मुबारक हो, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: नहीं! उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, वह चादर उस पर आग बनकर जल रही है, जो उसने ख़ैबर के दिन माल-ए-ग़नीमत में से चुरा ली थी जबकि वह माल अभी तक बांटा नहीं गया था। यानी जो माल जमा हो रहा था, उसमें से उसने वह चादर चुरा ली थी। तो एक व्यक्ति ने जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से यह सुना कि यह तो बहुत ख़तरनाक बात है कि यह शख़्स उस चादर को चुराने की वजह से जहन्नम में जा रहा है, तो वह एक तस्मा या दो तस्मे लेकर आया और अर्ज़ किया: यह वह चीज़ है जिसे मैंने भी उठा लिया था। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: एक तस्मा हो या दो, वह भी आग में ले जाने का कारण बन सकता है।

(सहीह बुखारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वत ख़ैबर, हदीस 4234)

छोटी से छोटी चीज़ भी अगर चोरी की गई है, तो वह सज़ा का कारण बन सकती है। इस जंग की तफ़सील में आगे ये भी लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यहां के यहूदियों से लड़ाई के लिए सहाबा की सफ़ आराई की। एक झंडा हज़रत सअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु को, एक हज़रत हबाब बिन मुनज़िर रज़ियल्लाहु अन्हु को, एक हज़रत सहल बिन हनीफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु को, और एक झंडा हज़रत अब्बाद बिन बिश्र रज़ियल्लाहु अन्हु को दिया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यहूदियों को इस्लाम की दावत दी और बताया कि अगर वे इस्लाम क़बूल कर लें तो अपनी जानें और माल बचा सकते हैं, और उनका हिसाब अल्लाह के सुपुर्द होगा। लेकिन यहूदियों ने इनकार कर दिया और जंग के लिए तैयार हो गए।

सबसे पहले एक यहूदी मुबारज़त (एकल युद्ध) के लिए निकला, तो हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसे क़त्ल कर दिया। फिर एक और यहूदी निकला, जिसे हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़त्ल कर दिया। फिर एक और यहूदी निकला, जिसे हज़रत अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़त्ल किया। इस तरह रात तक लड़ाई होती रही और यहूदियों के कुल ग्यारह आदमी मारे गए। जब अगला दिन आया, तो सूरज निकलने से पहले ही यहूदियों ने हथियार डाल दिए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वादी-उल-क़ुरा को फतह कर लिया। अल्लाह तआला ने वहाँ के यहूदियों के माल-ओ-दौलत को बतौर ग़नीमत आपके हवाले किया, और मुसलमानों को बहुत सारा माल हासिल हुआ। आपने सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वादी-उल-क़ुरा में ही माल-ए-ग़नीमत को सहाबा में तक़सीम किया और ज़मीनें और नख़लिस्तान यहूदियों के ही हवाले करके उन्हें उनका कारकुन बना दिया। जिस तरह ख़ैबर के यहूदियों को बनाया गया था कि इसे अपने पास रखो, मेहनत करो और हिस्सा देते रहो।

अल्लामा बलाज़री कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत अम्र बिन सईद बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु को वादी-उल-क़ुरा का वाली मुक़र्रर किया। आपने वहां चार दिन क़ियाम फ़रमाया, फिर मदीना वापस तशरीफ़ ले आए।

(सुबुलुल-हुदा वुर्रशाद, जिल्द 5, सफ़ा 149, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत), (अस्सीरतुल हलबिया, जिल्द 3, सफ़ा 86, दार अल-कुतुब अल-इल्मिया, बेरूत)، (लुअलुअल मकनून, जिल्द 3, सफ़ा 465, दारुस्सलाम)

इसकी और तफ़सील इंशा अल्लाह आगे दी जाएगी। इस वक़्त मैं कुछ मरहूमीन का ज़िक्र करूंगा और फिर उनके जनाज़ा ग़ायब की नमाज़ भी इंशा अल्लाह नमाज़ के बाद अदा की जाएगी।

पहला ज़िक्र श्रीमान मौलाना मोहम्मद करीमुद्दीन शाहिद साहिब का है जो सदर

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 08 May 2025 Issue No. 19

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान थे। हाल ही में रमज़ान के दिनों में 87 साल की उम्र में उनका इंतक़ाल हुआ है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम मूसी भी थे। उनके पिता ने बैअत कर के जमाअत अहमदिया में शमूलियत इख्तियार की थी और मुख़्तलिफ़ जगहों पर प्राइवेट नौकरी किया करते थे। गांव में रह रहे थे जहां तालीम का मुनासिब इंतेज़ाम नहीं था। तो हैदराबाद कलकत्ता के चिंताकुंटा के मुहतरम सेठ मोहम्मद मुईनुद्दीन साहिब ने तालीम हासिल करने के लिए करीमुद्दीन साहिब को क़ादियान भिजवाया।

1954 में मदरसा अहमदिया में दाख़िला लिया, 1957 में फ़ारिगुत्तालीम हुए। फिर मौलवी फ़ाज़िल की तैयारी करके 1960 में पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ से मौलवी फ़ाज़िल का इम्तिहान पास किया। बाद में अधिक तालीम के लिए रब्वा भी गए, वहाँ दो साल जामिया अहमदिया में तालीम हासिल की और शाहिद की डिग्री प्राप्त की। इस तरह इंडिया में शाहिद की डिग्री हासिल करने वाले आप पहले मुबल्लिग़ बने। क़ादियान में मुख़्तलिफ़ ख़िदमात का मौक़ा मिला। इस दौरान आप सदर अंजुमन अहमदिया के मेंबर भी बने और 2021 तक इस ओहदे पर रहे। फिर एडिशनल नाज़िम इर्शाद वक़्फ़े जदीद बैरून की ख़िदमत की तौफ़ीक़ भी मिली। सदर उमूमी और सदर मजलिस वक़्फ़े जदीद के तौर पर भी ख़िदमत का मौक़ा मिला। फिर जामिया में प्रिंसिपल भी रहे। यह दो बार बने। दारुलक़ज़ा में सदर क़ज़ा बोर्ड भी रहे। सदर मजलिस कारपरदाज़ भी थे। फिर 2021 में मैंने उन्हें सदर सदर अंजुमन अहमदिया निर्धरित किया था और वफ़ात तक इसी ओहदे पर रहे।

इनाम ग़ौरी साहिब, नाज़िर आला क़ादियान कहते हैं कि मरहूम बेहद सादा तबीयत और इंतेहाई क़नाअतपसंद इंसान थे यह एक हक़ीक़त है। मैंने भी यही देखा है। मरहूम को जमाअत की तरफ से जो वज़ीफ़ा या आमद होती थी, उसी में सफ़ैदपोशी के साथ गुज़ारा करते और कर्ज़ लेकर ख़र्च उठाना उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं था। निहायत ख़ुशख़त और आला दर्जे के कातिब थे। जब तक कंप्यूटर पर कंपोज़िंग शुरू नहीं हुई, अख़बार "बदर" और जमाअत की किताबों व रिसालों की किताबत की तौफ़ीक़ उन्हें मिलती रही। अच्छे मुकर्रिर थे, मज़मून निगार थे। जलसा क़ादियान और दीगर जमाअती तक्रारीब व तरबीयती जलसों में तक़रीर करने का मौक़ा मिलता रहा। क़ादियान से एम.टी.ए पर लाइव नशर होने वाले "राह-ए-हुदा" प्रोग्राम में लंबे अरसे तक सवालों के जवाब देने की तौफ़ीक़ मिली। गुर्दे की बीमारी थी, कमज़ोर भी हो गए थे लेकिन इसके बावजूद बड़ी हिम्मत से अपने फ़रायज़ अंजाम देते रहे और उनका नमूना वाक़ई क़ाबिले क़द्र था। क़ादियान के पिछले जलसे 2024 की सदारत भी की। बीमारी और कमज़ोर सेहत के बावजूद बड़ी हिम्मत से तीन दिन तक जलसे की सदारत की। इसी तरह उन्होंने पिछली शूरा की भी सदारत की। अल्लाह तआला ने बासठ साल का लंबा अरसा उन्हें ख़िदमत-ए-सिलसिला की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। ज़िंदगी के आख़िरी दिनों में घर वालों से यह इज़हार किया करते थे कि मेरी पैदाइश रमज़ान के महीने में हुई है, यह देखना है कि मेरी वफ़ात भी रमज़ान में होती है। चुनांचे 27 रमज़ानुल मुबारक को उनकी वफ़ात हुई जैसा कि मैंने ज़िक्र किया। ..

शेष ..

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

पृष्ठ 1 का शेष

को घूमते कि कहीं अकेले मिल जाएँ तो क़त्ल कर दूँ। लोगों से पूछा कि आप अकेले कहाँ होते हैं। लोगों ने कहा कि आधी रात के बाद काबा में जाकर नमाज़ पढ़ते हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु यह सुनकर बहुत खुश हुए और काबा में जाकर छुप गए। थोड़ी देर बाद जंगल से "ला इलाहा इल्लल्लाह" की आवाज़ आती सुनाई दी, और यह आवाज़ हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ही थी। इस आवाज़ को सुनकर और यह जानकर कि वह उधर ही आ रही है, हज़रत उमर और भी संभलकर छुप गए और यह इरादा कर लिया कि जब आप सिजदे में जाएँगे, तो तलवार से सिर जुदा कर दूँगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आते ही नमाज़ शुरू कर दी। इसके बाद के हालात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु खुद बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सिजदे में इस क़दर रो-रो कर दुआएँ कीं कि मेरे जिस्म में कपकपी छूटने लगी। यहाँ तक कि आपने यह भी कहा: "सजद लका रूही व जनानी" यानी, "ऐ मेरे मौला! मेरी रूह और मेरा दिल भी तेरा सजदा कर चुके।"

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि उन दुआओं को सुन-सुनकर मेरा जिगर टुकड़े-टुकड़े हो गया। आख़िरकार अल्लाह के खौफ़ से मेरे हाथ से तलवार गिर गई। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस हालत से समझ लिया कि यह शख्स सच्चा है और ज़रूर कामयाब होगा। लेकिन नफ़्स-ए-अम्मारा बुरा होता है। जब आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़कर निकले, तो मैं चुपचाप पीछे-पीछे हो लिया। आपके कदमों की आहट आपने महसूस की रात अंधेरी थी आपने पूछा: "कौन है?" मैंने कहा: "उमर।" आपने फ़रमाया: "ऐ उमर! तू न रात को पीछा छोड़ता है, न दिन को।" उस वक़्त मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की रूह की खुशबू महसूस हुई और मेरी आत्मा ने महसूस किया कि आप बद्दुआ करेंगे। मैंने अर्ज़ किया: "या रसूलल्लाह! बद्दुआ न करें।"

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि वही वक्त, वही घड़ी मेरे इस्लाम लाने की थी। यहाँ तक कि अल्लाह ने मुझे तौफ़ीक़ दी और मैं मुसलमान हो गया।

अब सोचो कि उस गिड़गिड़ाहट और रोने में कैसी तलवार छुपी थी कि उमर जैसे व्यक्ति को, जो बाकायदा क़त्ल का मुआहदा करके आता है, अपनी अदा का शहीद बना लिया। उस तवज्जो और ज़ारी में ऐसी तलवार होती है जो तलवार और भाले से बढ़कर असर करती है। ग़रज़, वह ज़माना हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मक्की ज़िंदगी का था, और उस समय अहमद नाम के ज़ुहूर का दौर था। इसीलिए मक्का में आशिक़ाना रंग का जलवा दिखाया गया। आपने अपने आप को ख़ाक में मिला दिया और हज़ारों मौतें अपने ऊपर ओढ़ लीं। अल्लाह तआला के सिवा कोई उस जोश, वफ़ा, गिड़गिड़ाहट, और दुआओं की शिद्दत का अंदाज़ा नहीं कर सकता। इन मौतों के बाद वह ताक़त, वह ज़िंदगी आपको मिली कि आप लाखों मरे हुओं को ज़िंदा करने वाले बने, "हाशिरुन्नास" कहलाए, और आज तक अपनी रूहानी ताक़त से करोड़ों मुर्दों को ज़िंदा कर रहे हैं और क़ियामत तक करते रहेंगे।

(मलफ़ूज़ात, जिल्द 2, पृष्ठ 64 से 65, एडिशन 2018, क़ादियान)

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad